वर्तमान कमल ज्योति

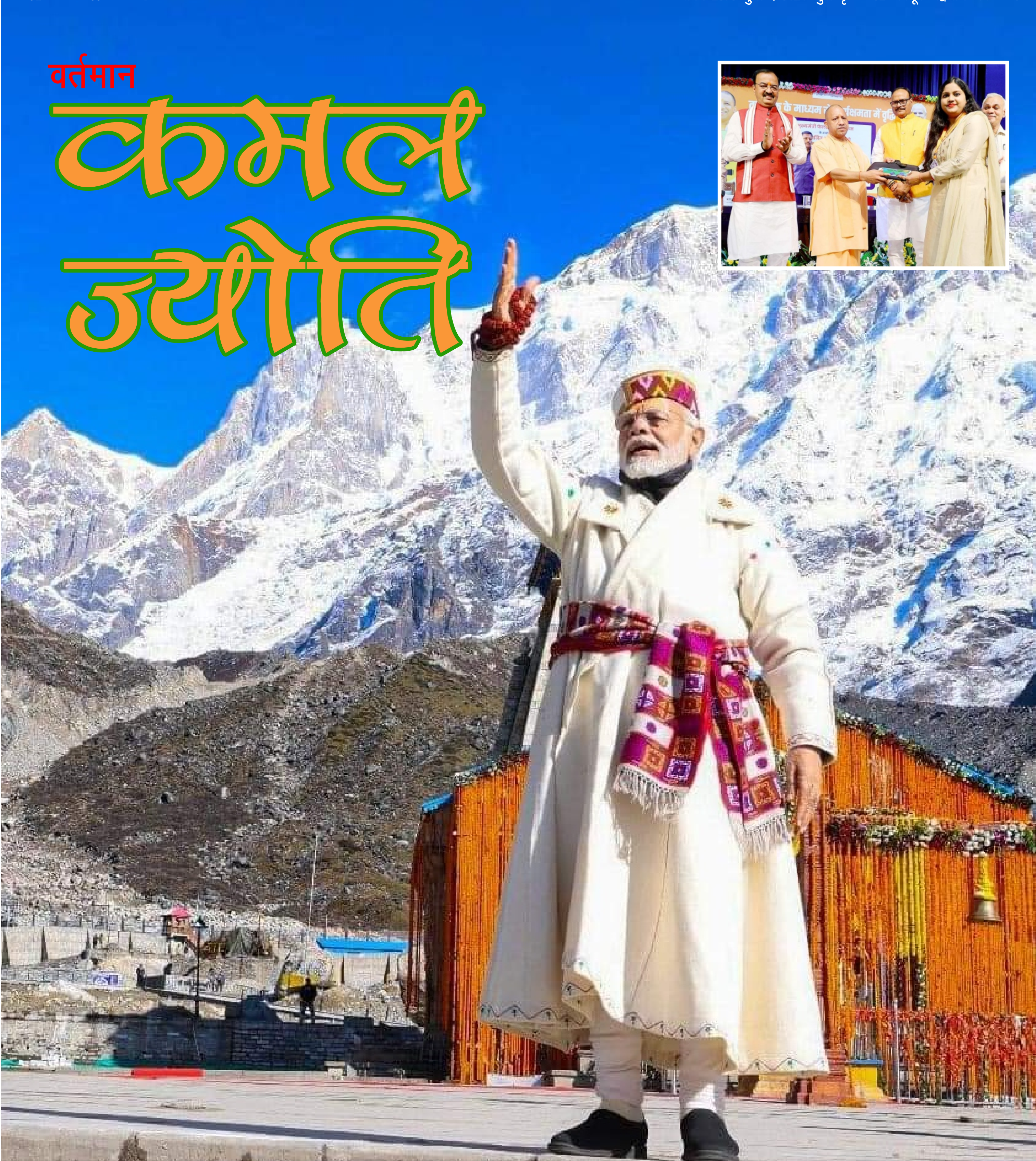

सुराज की विचार यात्रा

वर्तमान कमल ज्योति

दीपोत्सव

Ayodhya, 2022

प्रदेश पदाधिकारी बैठक, लखनऊ

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

अवधपुरी सियाराम पधारे..

छठ, कार्तिक पूर्णिमा, प्रकाश पर्व गुरुनानक जयन्ती की हार्दिक शुभकामनायें

विकास की रिद्धि सिद्धि साधना

2022 का दीपोत्सव देशभर में समृद्धि का मार्ग लेकर आया है। प्रधानमंत्री ने देशभर में रोजगार मेले में 75000 युवाओं को नियुक्ति पत्र देकर के 1 साल में 1 लाख लोगों को रोजगार देने की मिशन की शुरुआत की है। सामूहिक नियुक्ति पत्र सपने के अवसर पर उन्होंने कहा कि पिछले साथ 8 साल में विभिन्न क्षेत्रों में उठाए गए कदमों से बड़ी संख्या में रोजगार और स्वरोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। केंद्र के अलावा भाजपा और राजग शासित राज्य और केंद्र शासित प्रदेश भी आने वाले दिनों में रोजगार मेले आयोजित करेंगे। प्रधानमंत्री ने इस साल जून में केंद्र के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों को अगले 18 महीने के भीतर 10 लाख नौकरियां नियुक्तियां करने का निर्देश दिया था। हालांकि उन्होंने यह भी कहा है कि पिछले 100 साल में जारी बेरोजगारी की समस्या को 100 दिन में दूर नहीं किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कौशल विकास पर जोर देने के साथ ही कृषि, सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यम, अन्य क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए सरकारें काम कर रही है स्किल इंडिया के तहत 1.25 करोड़ से अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया गया है। पहली बार खादी ग्रामोद्योग आयोग में 4 करोड़ से अधिक नौकरियां सृजित हुई हैं। प्रधानमंत्री ने युवाओं से कहा है कि हमेशा अपने कर्तव्य पथ का ध्यान रखें सरकार बुनियादी ढांचे के निर्माण पर 16 करोड़ खर्च करने जा रही है। इसमें सिर्फ निर्माण ही नहीं हो रहा है। बल्कि पर्यटन से लेकर के अन्य क्षेत्रों में बड़ी संख्या में रोजगार पैदा होंगे सरकार ने स्वरोजगार के नए नए अवसर उपलब्ध कराने का काम किया है। आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया के तहत कई क्षेत्रों में शुरू करेगी उत्पादन से बड़ी प्रोत्साहन योजना और रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। उत्तर प्रदेश में केंद्रीय राज्य मंत्री डॉक्टर महेंद्र नाथ पांडे रोजगार मेले में सरकारी नौकरियों की नियुक्ति पत्र बांटे उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत में करोनाकाल की चुनौती को सफलतापूर्वक मुकाबला किया है। भारत युवाओं का देश है युवाओं के हाथ में रोजगार होगा तो परिवार खुशहाली के रास्ते पर जाएगा और देश की तरक्की होगी। सबके हाथ में रोजी रहेगी तो रोटी का इंतजाम होगा। स्वरोजगार की दिशा में हाथ बढ़े तो सरकारी सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएं हैं। उनका भरपूर उपयोग किया जाएगा आज पूरा विश्व आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा है, ऐसे में भारत अपने सीमित साधनों के द्वारा ही भारत में रोजगार के अवसर को बढ़ावा दे रहा है। आज भारत की अर्थव्यवस्था निरंतर आगे बढ़ रही है अब देश जिस प्रकार से समृद्धि और खुशहाली के रास्ते पर चल रहा है। जिसमें अंत्योदय के पथ पर चलते हुए भारत सरकार गरीब कल्याण के लिए कार्य कर रही है। अंतिम पायदान पर खड़े हुए व्यक्ति के विकास की चिंता हो रही है। उत्तर प्रदेश में भी रोजगार के नए अवसर बन रहे हैं। जिससे उत्तर प्रदेश देश के लिए एक आर्थिक स्तंभ के रूप में खड़ा होता जा रहा है। पहली बार धनतेरस पर देश में इतनी बड़ी सरकारी नौकरियों के नियुक्ति पत्र सौंपे गए। 50 से ज्यादा केंद्रीय मंत्रियों ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं को नियुक्ति पत्र बांटे। समूह ''अ'' ''ब'' समूह ''ग'' श्रेणी की नौकरियां दी गई। यूपीएससी, एसएससी रेलवे भर्ती बोर्ड के जरिए की जा रही भर्तियां। कार्मिक विभाग अगले कुछ महीनों में नियुक्ति पत्रों की अगली किस्त जारी करेगा। धनतेरस पर रोजगार मेले जिस प्रकार से देशव्यापी बनाया गया। उससे भारत में सुख शांति समृद्धि निरंतर बनती जा रही है। प्रधानमंत्री का इस अवसर पर कहना कि वैश्विक संकट के चलते कई देश मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। वहीं भारत में नौकरियों के लिए नए अवसर पैदा हो रहे हैं। उन्होंने कर्मचारियों भविष्य निधि फंड के आंकड़ों का हवाला दिया। इस विशेष रोजगार अभियान के पहले चरण में जिन 75000 युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपा गए। उन्हें केंद्र सरकार के 38 मंत्रालयों और विभागों में नौकरियां मिली है। विकास के इस पुनीत काम के लिए देश प्रदेश की सरकारों को साधुवाद आइए दीपोत्सव मनाते हुए प्रगति निरंतर पथ पर बढ़े।

सम्पादकीय

akatri.t@gmail.com

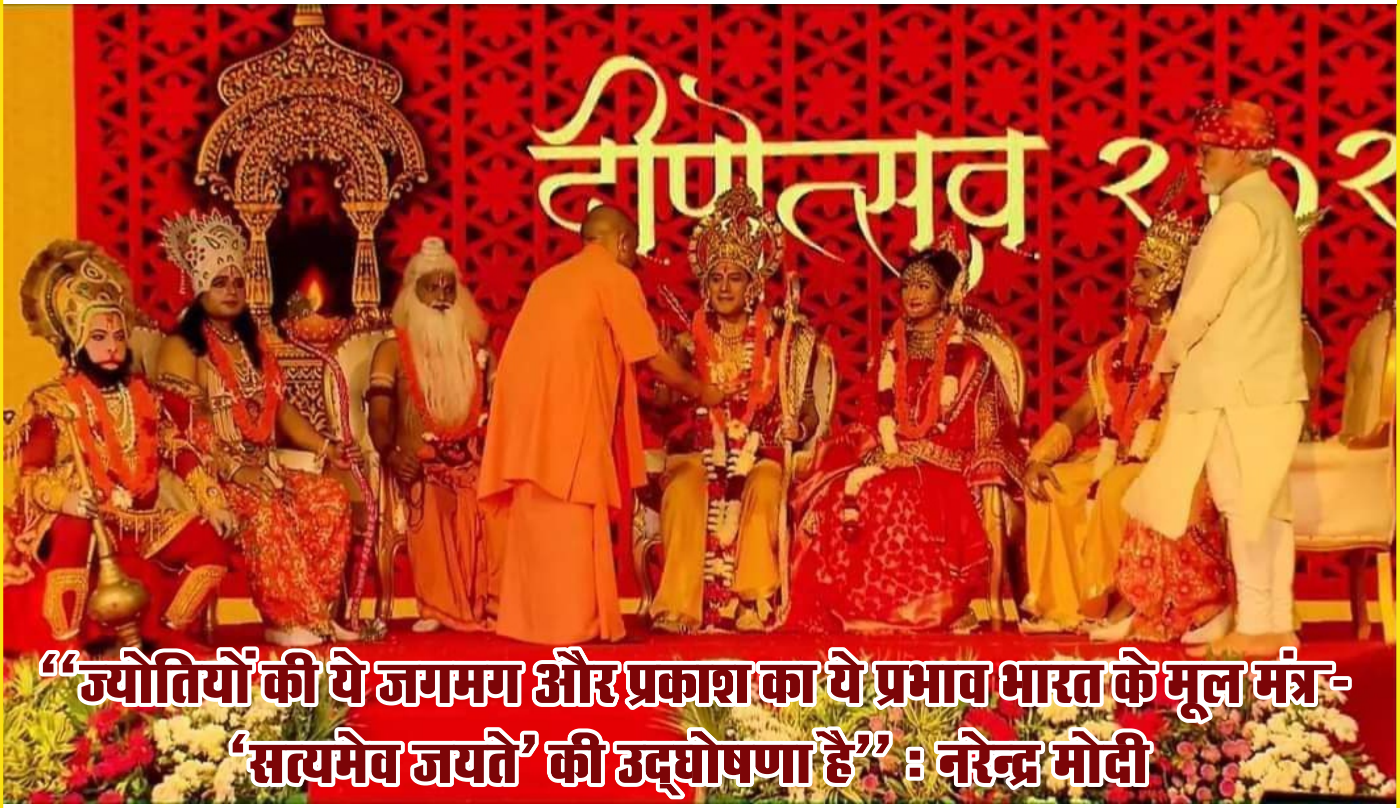

"ज्योतियों की ये जगमग और प्रकाश का ये प्रभाव भारत के मूल मंत्र - 'सत्यमेव जयते' की उद्घोषणा है" : नरेन्द्र मोदी

राज कुमार

मोक्ष दायिनी नगरी अयोध्या में भगवान राम की वापसी, अवध के जन–जन के मन में बसे राम, मर्यादा पुरूषोत्तम राम जी के अगवानी में ऐतिहासिक "**दीपोत्सव**" में अयोध्या जी में 21 लाख दीप जलाये गये। राम की पैड़ी पर 15.76 लाख का विश्व रिकार्ड बना, अद्भुत सजी–धजी, अयोध्या धाम में लोककलाकारों द्वारा विविध नृत्य, संगीत, गूँज रहे थे तो दूसरी तरफ रामलीला मंचित हो रही थी। प्रधानमंत्री रामजन्मभूमि मन्दिर परिसर में पूजन अर्चन के बाद मन्दिर निर्माण का अवलोकन किया। प्रारम्भ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, महामहीम राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल, उप मुख्यमंत्री द्वव, मंत्री मंण्डल के सहयोगीगण, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबले, सह सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल जी समेत अयोध्या के पूज्य संत महत्थों ने अभिषेक तिलक किया। मोदी जी ने सरयू आरती एवं राज्याभिषेक किया। इस अवसर पर विशाल जनमानस को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि ....

अयोध्या जी, दीपों से दिव्य है, भावनाओं से भव्य है। आज अयोध्या नगरी, भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के स्वर्णिम अध्याय का प्रतिबिंब है। मैं जब रामाभिषेक के बाद यहाँ आ रहा था, तो मेरे मन में भावों की, भावनाओं की, भावुकताओं की लहरें उठ रहीं थीं। मैं सोच रहा था, जब 14 वर्ष के वनवास के बाद प्रभु श्रीराम अयोध्या आए होंगे, तो अयोध्या कैसे सजी होगी, कैसे संवरी होंगी? हमने त्रेता की उस अयोध्या के दर्शन नहीं किए, लेकिन प्रभु राम के आशीर्वाद से आज अमृतकाल में अमर अयोध्या की अलौकिकता के साक्षी बन रहे हैं।

हम उस सभ्यता और संस्कृति के वाहक हैं, पर्व और उत्सव जिनके जीवन का सहज–स्वाभाविक हिस्सा रहे हैं। हमारे यहाँ जब भी समाज ने कुछ नया किया, हमने एक नया उत्सव रच दिया। सत्य की हर विजय के, असत्य के हर अंत के मानवीय संदेश को हमने जितनी मजबूती से जीवंत रखा, इसमें भारत का कोई सानी नहीं है। प्रभु श्रीराम ने रावण के अत्याचार का अंत हजारों वर्ष पूर्व किया था, लेकिन आज हजारों–हजार साल बाद भी उस घटना का एक–एक मानवीय संदेश, आध्यात्मिक संदेश एक–एक दीपक के रूप में सतत प्रकाशित होता है।

"आज अयोध्या भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के स्वर्णिम अध्याय का प्रतिबिंब है"

दीपावली के दीपक हमारे लिए केवल एक वस्तु नहीं है। ये भारत के आदर्शों, मूल्यों और दर्शन के जीवंत ऊर्जापुंज हैं। आप देखिए, जहां तक नज़र जा रही है, ज्योतियों की ये जगमग, प्रकाश का ये प्रभाव, रात के ललाट पर रश्मियों का ये विस्तार, भारत के मूल मंत्र 'सत्यमेव जयते' की उद्घोषणा है। ये उद्घोषणा है हमारे उपनिषद वाक्यों की– "सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः"। अर्थात्, जीत सत्य की ही होती है, असत्य की नहीं। ये उद्घोषणा है हमारे ऋषि वाक्यों की– "रामो राजमणिः सदा विजयते"। अर्थात्, विजय हमेशा राम रूपी सदाचार की ही होती है, रावण रूपी दुराचार की नहीं। तभी तो, हमारे ऋषियों ने भौतिक दीपक में भी चेतन ऊर्जा के दर्शन करते हुये कहा था– दीपो ज्योतिः परब्रह्म दीपो ज्योतिः जनार्दन। अर्थात्, दीप–ज्योति ब्रह्म का ही स्वरूप है। मुझे विश्वास है, ये आध्यात्मिक प्रकाश भारत की प्रगति का पथप्रदर्शन करेगा, भारत के पुनरोत्थान का पथप्रदर्शन करेगा।

इस पावन अवसर पर, जगमगाते हुए इन लाखों दीयों की रोशनी में देशवासियों को एक और बात याद दिलाना चाहता हूं। रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है–"जगत प्रकास्य प्रकासक रामू"। अर्थात्, भगवान् राम पूरे विश्व को प्रकाश देने वाले हैं। वो पूरे विश्व के लिए एक ज्योतिपुंज की तरह है। ये प्रकाश कौन सा है? ये प्रकाश है– दया और करुणा का। ये प्रकाश है– मानवता और मर्यादा का। ये प्रकाश है– समभाव और ममभाव का। ये प्रकाश है– सबके साथ का, ये प्रकाश है– सबको साथ लेकर चलने के संदेश का। मुझे याद है,

'दीये' अंधकार को दूर करने के लिए जलते हैं और समर्पण की एक भावना पैदा करते हैं'

बरसों पहले शायद लड़कपन में गुजराती में दीपक पर एक कविता लिखी थी। और कविता का शीर्षक था– दीया–, गुजराती में कहते हैं – દીવો। उसकी कुछ पंक्तियां आज मुझे याद आ रही हैं। मैंने लिखा था– દીવા જેવી આશ ને દીવા જેવો તાપ, દીવા જેવી આગ ને દીવા થકી હાશ. ઊગતા સૂરજને હર કોઈ પૂજે, એ તો આથમતી સાંજે'ય આપે સાથ. જાતે બળે ને બાળે અંધાર, માનવના મનમાં ઊગે રખોપાનો ભાવ. अर्थात, दीया आशा भी देता है और दीया ऊष्मा भी देता है। दीया आग भी देता है और दीया आराम भी देता है। उगते सूरज को तो हर कोई पूजता है, लेकिन दीया, अंधेरी शाम में भी साथ देता है। दीया स्वयं जलता है और अंधेरे को भी जलाता है, दीया मनुष्य के मन में समर्पण का भाव लाता है। हम स्वयं जलते हैं, स्वयं तपते हैं, स्वयं खपते हैं, लेकिन जब सिद्धि का प्रकाश पैदा होता है तो हम उसे निष्काम भाव से पूरे संसार के लिए बिखेर देते हैं, पूरे संसार को समर्पित कर देते हैं।

भाइयों और बहनों,

जब हम स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ की ये यात्रा करते हैं, तो उसमें सर्वसमावेश का संकल्प अपने आप समाहित हो जाता है। जब हमारे संकल्पों की सिद्धि होती है तो हम कहते हैं– 'इदम् नमम्' अर्थात्, ये सिद्धि मेरे लिए नहीं है, ये मानव मात्र के कल्याण के लिए है। दीप से दीपावली तक, यही भारत का दर्शन है, यही भारत का चिंतन है, यही भारत की चिरंतर संस्कृति है। हम सब जानते हैं, मध्यकाल और आधुनिककाल तक भारत ने कितने अंधकार भरे युगों का सामना किया है। जिन झंझावातों में बड़ी–बड़ी सभ्यताओं के सूर्य अस्त हो गए, उनमें हमारे दीपक जलते रहे, प्रकाश देते रहे फिर उन तूफानों को शांत कर उद्दीप्त हो उठे। क्योंकि, हमने दीप जलाना नहीं छोड़ा। हमने विश्वास बढ़ाना नहीं छोड़ा। बहुत समय नहीं हुआ, जब कोरोना के हमले की मुश्किलों के बीच इसी भाव से हर एक भारतवासी एक–एक दीपक लेकर खड़ा हो गया था। और, आज, कोरोना के खिलाफ युद्ध में भारत कितनी ताकत से लड़ रहा है, ये दुनिया देख रही है। ये प्रमाण है कि, अंधकार के हर युग से निकलकर भारत ने प्रगति के प्रशस्त पथ पर अपने पराक्रम का प्रकाश अतीत में भी बिखेरा है, भविष्य में भी बिखेरेगा। जब प्रकाश हमारे कर्मों का साक्षी बनता है, तो अंधकार का अंत अपने आप सुनिश्चित हो जाता है। जब दीपक हमारे कर्मों का साक्षी बनता है, तो नई सुबह का, नई शुरुआत का आत्मविश्वास अपने आप सुदृढ़ हो जाता है।

हम युद्ध के विरोधी हैं, लेकिन सामर्थ्य के बिना शांति भी संभव नहीं : नरेन्द्र मोदी

कारगिल सीमा पर दीपावली

> "जिस भारत का हम सम्मान करते हैं वह सिर्फ एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं है बल्कि एक जीवंत भाव है, एक निरंतर चेतना है, एक अमर अस्तित्व है"

कुछ बात ऐसी है कि हस्ती मिटती नही हमारी, भारतीय सेना इसका उदाहरण है।

सशस्त्र बलों के साथ दिवाली मनाने की अपनी परंपरा को कायम रखते हुए, प्रधानमंत्री ने यह दिवाली कारगिल में सशस्त्र बलों के साथ मनाई। प्रधानमंत्री को सीमा पर अपने बीच पाकर सेना का हौशला दो गुना हो जाता है। राष्ट्रीय प्रहरियों के बीच उन्होंने सम्बोधित करते हुए कहा कि....

भारत माता की जय!

पराक्रम और शौर्य से सिंचित कारगिल की इस मिट्टी को नमन करने का भाव मुझे बार बार अपने वीर बेटे–बेटियों के बीच खींच लाता है। मेरे लिए तो, वर्षों–वर्ष से मेरा परिवार आप सब ही हैं। मेरी दीपावली की मिठास आपके बीच बढ़ जाती है, मेरी दीपावली का प्रकाश आपके बीच है और अगली दिवाली तक मेरा पथ प्रशस्त करता है। मेरी दीपावली का उल्लास आपके पास है, मेरी उमंग आपके साथ है। मेरा सौभाग्य है, मुझे बरसों से दिवाली आपके बीच बॉर्डर पर आकर मनाने का अवसर मिल रहा है। एक ओर देश की संप्रभु सीमा, और दूसरी ओर उसके समर्पित सिपाही! एक ओर मातृभूमि की ममतामयी मिट्टी और दूसरी ओर उसे चन्दन बनाकर माथे पर लगाने वाले आप सब मेरे वीर जवान साथी, जांबाज नौजवान! इससे बेहतर दिवाली मुझे और कहाँ नसीब हो सकती है? और हम बपअपसपंद लोगों की दिवाली, हमारी आतिशबाज़ी और कहां आपकी आतिशबाज़ी, आपकी तो आतिशबाज़ी ही अलग होती है। आपके धमाके भी अलग होते हैं।

दिवाली का अर्थ है, आतंक के अंत के साथ उत्सव! आतंक के अंत का उत्सव! यही कारगिल ने भी किया था। कारगिल में हमारी सेना ने आतंक के फन को कुचला था, और देश में जीत की ऐसी दिवाली मनी थी, ऐसी दिवाली मनी थी कि लोग आज भी याद करते हैं। मेरा ये सौभाग्य रहा है, मैं उस जीत का भी साक्षी बना था, और मैंने उस युद्ध को भी करीब से देखा था। मैं हमारे अधिकारियों का आभारी हूं कि यहां आते ही मुझे कई साल पुरानी मेरी वो तस्वीरें दिखायी जो पल मैं आपके बीच में बिताता था। मेरे लिए वो पल बड़े भावुक थे, जब मैं वो फोटो देख रहा था और मैं आप सबका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे यादों के अंदर वीर जवानों के बीच में बीते हुए मेरे पल को फिर से आपने मुझे याद करा दिया, मैं आपका बहुत आभारी हूं। जब हमारे जवान कारगिल युद्ध में दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब दे रहे थे, तब मुझे उनके बीच आने का सौभाग्य मिला था। देश के एक सामान्य नागरिक के रूप में मेरा कर्तव्य पथ, मुझे रणभूमि तक ले आया था। देश ने अपने सैनिकों की सेवा के लिए जो भी छोटी–मोटी राहत सामग्री भेजी थी। हम उसे लेकर यहां पहुंचे थे। हम तो सिर्फ उससे पुण्य कमा रहे थे क्योंकि देव भक्ति तो करते हैं, वो पल देशभक्ति के रंग से रंगे हुए आपका पूजन का मेरे लिए वो पल था। उस समय की कितनी ही यादें हैं, जो मैं कभी भूल नहीं सकता। ऐसा लगता था, चारों दिशाओं में विजय का जयघोष है, जयघोष है, जयघोष है। हर मन का आह्वान था– मन समर्पित, तन समर्पित। और यह जीवन समर्पित। चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूं!

हम जिस राष्ट्र की आराधना करते हैं, हमारा वो भारत केवल एक भौगोलिक भूखंड मात्र नहीं है। हमारा भारत एक जीवंत विभूति है, एक चिरंतर चेतना है, एक अमर अस्तित्व है। जब हम भारत कहते

हैं, तो सामने शाश्वत संस्कृति का चित्र उभर जाता है। जब हम भारत कहते हैं, तो सामने वीरता की विरासत उठ खड़ी होती है। जब हम भारत कहते हैं, तो सामने पराक्रम की परिपाटी प्रखर हो उठती है। ये एक ऐसी अजस्र धारा है, जो एक ओर गगनचुंबी हिमालय से प्रस्फुटित होती है तो दूसरी ओर हिन्द महासागर में समाहित होती है। अतीत में असीम लपटें उठीं, विश्व की कितनी ही लहलहाती सभ्यताएँ रेगिस्तान सी वीरान हो गईं, लेकिन भारत के अस्तित्व की ये सांस्कृतिक धारा आज भी अविरल है, अमर है। और मेरे जवानों, एक राष्ट्र कब अमर होता है? राष्ट्र तब अमर होता है जब उसकी संतानों को, उसके वीर बेटे–बेटियों को अपने सामर्थ्य पर, अपने संसाधनों पर परम विश्वास होता है। राष्ट्र तब अमर होता है, जब उसके सैनिकों के शीश हिमालय के शीर्ष शिखरों की तरह उत्तुंग होते हैं। एक राष्ट्र तब अमर होता है जब उसकी संतानों के बारे में ये कहा जा सके कि– चलन्तु गिरयः कामं युगान्त पवनाहताः। कृच्छेरपि न चलत्येव धीराणां निश्चलं मनः यानी, प्रलयकाल के तूफानों से विशाल पर्वत भले ही क्यों न उखड़ जाएँ, लेकिन आप जैसे धीरों और वीरों के मन अडिग, अटल और निश्चल होते हैं। इसलिए, आपकी भुजाओं का सामर्थ्य हिमालय की दुरूह ऊंचाइयों को नापता है। आपका मनस्वी मन, मरुस्थलों की मुश्किलों का सफलता से मुक़ाबला करता हैं। आपके असीम शौर्य के आगे अनंत आकाश और असीमित समंदर घुटने टेकते हैं। कारगिल का कुरुक्षेत्र भारतीय सेना के इस पराक्रम का बुलंद गवाह बन चुका है। ये द्रास, ये बटालिक और ये टाइगर हिल, ये गवाह हैं कि पहाड़ों की ऊंचाइयों पर बैठा दुश्मन भी भारतीय सेना के गगनचुंबी साहस और शौर्य के आगे कैसे बौना बन जाता है। जिस देश के सैनिकों का शौर्य इतना अनंत हो, उस राष्ट्र का अस्तित्व अमर और अटल ही होता है।

आप सभी, सीमा के हमारे प्रहरी देश की रक्षा के मज़बूत स्तंभ हैं। आप हैं, तभी देश के भीतर देशवासी चैन से रहते हैं, निश्चिंत रहते हैं। लेकिन ये हर भारतवासी के लिए खुशी की बात है कि देश के सुरक्षा कवच को संपूर्णता देने के लिए, हर भारतवासी पूरी शक्ति लगा रहा है। देश सुरक्षित तभी होता है, जब बॉर्डर सुरक्षित हों, अर्थव्यवस्था सशक्त हो और समाज आत्मविश्वास से भरा हो। आप भी बॉर्डर पर आज देश की ताकत की खबरें सुनते हैं, तो आपका हौसला दोगुना हो जाता होगा। जब देश के लोग स्वच्छता के मिशन से जुड़ते हैं, गरीब से गरीब को भी अपना पक्का घर, पीने का पानी, बिजली–गैस जैसी सुविधाएं रिकॉर्ड समय पर मिलती हैं, तब हर जवान को भी गर्व होता है। दूर कहीं उसके घर में, उसके गांव में, उसके शहर में सुविधाएं पहुंचती हैं, तो सीमा पर उसका सीना भी तन जाता है, उसे अच्छा लगता है। जब वो देखता है कि कनेक्टिविटी अच्छी हो रही है, तो उसका घर पर बात करना भी आसान होता है और छुट्टी पर घर पहुंचना भी आसान बन जाता है। मुझे पता है, जब 7–8 साल के भीतर ही देश की अर्थव्यवस्था 10वें नंबर से 5वें नंबर पर पहुंचती है, तो आपका भी माथा गर्व से ऊंचा होता है। जब एक तरफ आप जैसे युवा सीमा को संभालते हैं और दूसरी तरफ आपके ही युवा साथी 80 हज़ार से अधिक स्टार्ट अप बना देते हैं, नए–नए इनोवेशन करते हैं, तो आपकी खुशी भी बढ़ जाती है। दो दिन पहले ही इसरो ने ब्रॉडबैंड इंटरनेट का विस्तार करने वाले 36 सैटेलाइट, एक–साथ लॉन्च कर एक नया रिकॉर्ड बनाया है। अंतरिक्ष में भारत जब अपना सिक्का जमाता है तो कौन मेरा वीर जवान होगा जिसकी छाती चौड़ी न होती हो। कुछ महीने पहले जब युक्रेन में लड़ाई छिड़ी तो हमारा प्यारा तिरंगा कैसे वहां फंसे भारतीयों का सुरक्षा कवच बना, ये हम सभी ने देखा है। दुनिया में आज जिस प्रकार भारत का मान बढ़ा है, सम्मान बढ़ा है, विश्व पटल पर बढ़ती भारत की भूमिका आज सबके सामने है।

तेजी से बदलते हुए समय में, टेक्नोलॉजी के इस दौर में भविष्य के युद्धों का स्वरूप भी बदलने जा रहा है। नए दौर में नई चुनौतियों, नए तौर–तरीकों और राष्ट्ररक्षा के बदलती ज़रूरतों के हिसाब से भी आज हम देश की सैन्य ताकत को तैयार कर रहे हैं। सेना में बड़े रिफॉर्म्स, बड़े सुधार की जो ज़रूरत दशकों से महसूस की जा रही थी, वो आज ज़मीन पर उतर रही है। हमारी सेनाओं में बेहतर तालमेल हो, हम हर चुनौती के विरुद्ध तेज़ी से, त्वरित कार्रवाई कर सकें, इसके लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं। इसके लिए बै जैसे संस्थान का निर्माण किया गया है। सीमा पर आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का नेटवर्क तैयार किया जा रहा है, ताकि आप जैसे हमारे साथियों को अपना कर्तव्य निभाने में अधिक सुविधा हो। आज देश में अनेक सैनिक स्कूल खोले जा रहे हैं। सैनिक स्कूलों में, सैन्य ट्रेनिंग संस्थानों को बेटियों के लिए खोल दिया गया है और मुझे गर्व है मैं बहुत सारी बेटियों को मेरे सामने देख रहा हूं। भारत की सेना में बेटियों के आने से हमारी ताकत में वृद्धि होने वाली है, ये विश्वास रखिए। हमारा सामर्थ्य बढ़ने वाला है।

"मैं अपने सशस्त्र बलों की प्रशंसा करता हूं, जिन्होंने तय किया है कि 400 से अधिक रक्षा उपकरण अब विदेशों से नहीं खरीदे जाएंगे, और अब भारत में ही बनाए जाएंगे"

देश की सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है– आत्मनिर्भर भारत,

भारतीय सेनाओं के पास आधुनिक स्वदेशी हथियार। विदेशी हथियारों पर, विदेशी सिस्टम पर हमारी निर्भरता कम से कम हो, इसके लिए तीनों सेनाओं ने आत्मनिर्भरता का संकल्प लिया है। मैं प्रशंसा करता हूं अपनी तीनों सेनाओं की, जिन्होंने ये तय किया है कि 400 से भी अधिक रक्षा साजो सामान अब विदेशों से नहीं खरीदे जाएंगे। अब ये 400 हथियार भारत में ही बनेंगे, 400 प्रकार के भारत का सामर्थ्य बढ़ाएंगे। इसका एक और सबसे बड़ा लाभ होगा। जब भारत का जवान, अपने देश में बने हथियारों से लड़ेगा, तो उसका विश्वास चरम पर होगा। उसके हमले में दुश्मन के लिए ै नतचतपेम म्सममउमदज भी होगा और दुश्मन का मनोबल कुचलने का साहस भी। और मुझे खुशी है कि आज एक तरफ अगर हमारी सेनाएं ज्यादा से ज्यादा मेड इन इंडिया हथियार अपना रही हैं तो वहीं सामान्य भारतीय भी लोकल के लिए वोकल हो रहा है। और लोकल को ग्लोबल बनाने के लिए सपने देखकर के समय लगा रहा है।

आज ब्रह्मोस सुपर सोनिक मिसाइल्स से लेकर 'प्रचंड' लाइट बवउइंज हेलीकाप्टर्स और तेजस फाइटर जेट्स तक, ये रक्षा साजो सामान भारत की शक्ति का पर्याय बन रहे हैं। आज भारत के पास, विशाल समंदर में विप्लवी विक्रांत है। युद्ध गहराइयों में हुआ, तो अरि का अंत अरिहंत है। भारत के पास पृथ्वी है, आकाश है। अगर विनाश का तांडव है, तो शिव का त्रिशूल है, पिनाका है। कितना भी बड़ा कुरुक्षेत्र होगा, लक्ष्य भारत का अर्जुन भेदेगा। आज भारत अपनी सेना की ज़रूरत तो पूरी कर ही रहा है, बल्कि रक्षा उपकरणों का एक बड़ा निर्यातक भी बन रहा है। आज भारत अपने मिसाइल डिफेंस सिस्टम को सशक्त रहा है, वहीं दूसरी तरफ ड्रोन जैसी आधुनिक और प्रभावी तकनीक पर भी तेज़ी से काम कर रहा है।

"आप सरहद पर ढाल बनकर खड़े हैं जबकि देश के भीतर भी दुश्मनों के खिलाफ सख्त कार्रवा की जा रही है"

हम उस परंपरा को मानने वाले हैं जहां युद्ध को, हमने युद्ध को कभी पहला विकल्प नहीं माना है। हमने हमेशा, ये हमारा वीरता का भी कारण है, हमारे संस्कार का भी कारण है कि हमने युद्ध को हमेशा अंतिम विकल्प माना जाता है। युद्ध लंका में हुआ हो या फिर कुरुक्षेत्र में, अंत तक उसको टालने की हर संभव कोशिश हुई है। इसलिए हम विश्व शांति के पक्षधर हैं। हम युद्ध के विरोधी हैं। लेकिन शांति भी बिना सामर्थ्य के संभव नहीं होती। हमारी सेनाओं के पास सामर्थ्य भी है, रणनीति भी है। अगर कोई हमारी तरफ नज़र उठाकर देखेगा तो हमारी तीनों सेनाएं दुश्मन को उसी की भाषा में मुंहतोड़ जवाब देना भी जानती हैं।

देश के सामने, हमारी सेनाओं के सामने, एक और सोच अवरोध बनकर खड़ी थी। ये सोच है गुलामी की मानसिकता। आज देश इस मानसिकता से भी छुटकारा पा रहा है। लंबे समय तक देश की राजधानी में राजपथ गुलामी का एक प्रतीक था। आज वो कर्तव्य पथ बनकर नए भारत के नए विश्वास को बढ़ावा दे रहा है। इंडिया गेट के पास जहां कभी गुलामी का प्रतीक था, वहां आज नेता जी सुभाषचंद्र बोस की भव्य–विशाल प्रतिमा हमारे मार्ग दिखा रही है, हमारा मार्गदर्शन कर रही है। नेशनल वॉर मेमोरियल हो, राष्ट्रीय पुलिस स्मारक हो, राष्ट्ररक्षा के लिए कुछ भी कर गुजरने की प्रेरणा देने वाले ये तीर्थ भी नए भारत की पहचान हैं। कुछ समय पहले ही देश ने गुलामी के प्रतीक से भारतीय नौ–सेना को भी मुक्त किया है। नौ–सेना के ध्वज से अब वीर शिवाजी की नौ–सेना के शौर्य की प्रेरणा जुड़ गई है।

आज पूरे विश्व की नजर भारत पर है, भारत के बढ़ते सामर्थ्य पर है। जब भारत की ताकत बढ़ती है, तो शांति की उम्मीद बढ़ती है। जब भारत की ताकत बढ़ती है, तो समृद्धि की संभावना बढ़ती है। जब भारत की ताकत बढ़ती है, तो विश्व में एक संतुलन आता है। आज़ादी का ये अमृतकाल भारत की इसी ताकत का, इसी सामर्थ्य का साक्षात साक्षी बनने वाला है। इसमें आपकी भूमिका, आप सब वीर जवानों की भूमिका बहुत बड़ी भूमिका है, क्योंकि आप "भारत के गौरव की शान" हैं। तन तिरंगा, मन तिरंगा, चाहत तिरंगा, राह तिरंगा। विजय का विश्वास गरजता, सीमा से भी सीना चौड़ा, सपनों में संकल्प सुहाता, कदम–कदम पर दम दिखाता, भारत के गौरव– की शान, तुम्हे देख हर भारतीय गर्व से भर जाता है। वीर गाथा घर घर गुंजे, नर नारी सब शीश नवाऐ सागर से गहरा स्नेह हमारा अपने भी हैं, और सपने भी हैं, जवानों के अपने लोग भी तो होते हैं, आपका भी परिवार होता है। आपके सपने भी हैं फिर भी अपने भी हैं, और सपने भी हैं, देश हित सब किया है समर्पित अब देश के दुश्मन जान गए है लोहा तेरा मान गये है भारत के गौरव की शान, तुम्हे देख हर भारतीय गर्व से भर जाता है। प्रेम की बात चले तो सागर शान्त हो तुम पर देश पे नज़र उठी तो फिर वीर 'वज्र' 'विक्रांत' हो तुम, एक निडर 'अग्नि', एक आग हो तुम 'निर्भय' 'प्रचंड' और 'नाग' हो तुम 'अर्जुन' 'पृथ्वी' 'अरिहंत' हो तुम हर अन्धकार का अन्त हो तुम, तुम यहाँ तपस्या करते हो वहाँ देश धन्य हो जाता है, भारत के गौरव– की शान, तुम्हे देख हर भारतीय गर्व से भर जाता है। स्वाभिमान से खड़ा हुआ मस्तक हो तुम आसमां में 'तेजस' की हुंकार हो तुम दुश्मन की आँख में, आँख डाल के जो बोले 'ब्रम्होस' की अजेय ललकार हो तुम, हैं ऋणी तुम्हारे हर पल हम यह सत्य देश दोहराता है। भारत के गौरव– की शान, तुम्हे देख हर भारतीय गर्व से भर जाता है। एक बार फिर आप सभी को और कारगिल के वीरों की यह तीर्थ भूमि के हिमालय की गोद से मैं देश और दुनिया में बसे हुए सब भारतीयों को मेरे वीर जवानों की तरफ से, मेरी तरफ से भी दीपावली की अनेक–अनेक शुभकामनाएं देता हूं।

वंदे मातरम!

सशक्त सक्रिय बूथ हमारी संगठनात्मक संरचना का मूल मंत्र : डी0 पुरंदेश्वरी

विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन भाजपा के बनने के पीछे उसकी सतत सक्रियता, कार्यकर्ताओं से संवाद, निरंतर कार्यक्रम उनको इतनी ऊँचाई तक पहुँचाया है। पूरे देश भर में राष्ट्रीय महामंत्री अखिल भारतीय प्रवास योजना के अन्तर्गत श्रीमती डी0 पुरंदेश्वरी जी का त्रिदिवसीय प्रवास उ0प्र0 में रहा जिसमें उन्होंने विभिन्न प्रकार की संगठनात्मक बैठकों को किया। जिसमें प्रदेश पदाधिकारीयों की विशेष बैठक कर विचार विमर्श कर संगठन को गति देने का पाथेय दिया।

भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती डी. पुरंदेश्वरी ने कहा कि सशक्त मंडल सक्रिय बूथ हमारी संगठनात्मक संरचना का मूल मंत्र है। श्रीमती डी. पुरंदेश्वरी ने भाजपा के राज्य मुख्यालय पर आयोजित पार्टी के प्रदेश पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भाजपा पूरे देश में सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी व सर्वग्राही बन चुकी है। फिर भी हमें अपने संगठन विस्तार की यात्रा को धीमा नहीं करना है, बल्कि हमें सबका साथ–सबका विकास और सबका विश्वास की पार्टी की नीति को आगे बढाते हुए समाज के हर वर्ग और तबके के लोगों को पार्टी के साथ जोड़ने का काम करना है। बैठक में पार्टी के प्रदेश प्रभारी व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राधा मोहन सिंह, प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी, प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह जी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती डी. पुरंदेश्वरी जी ने कहा कि हम सबको मिलकर संगठन की योजनानुसार प्रवास, संवाद और समन्वय के आधार पर पार्टी संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने का कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत ने पूरे विश्व में एक सशक्त राष्ट्र के रूप अपनी पहचान बनाई है। मोदी जी के नेतृत्व में हो रहे गरीब कल्याण के कार्य औरजनकल्याणकारी योजनाओं के कारण समाज के हर वर्ग का आशीर्वाद भाजपा को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में भी एक लम्बे काल खण्ड के बाद जनता ने लगातार दूसरी बार हमारी पार्टी को अपना आशीर्वाद देकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाने का काम किया है। ऐसे में हम सब की जिम्मेदारी है कि केन्द्र व राज्य की भाजपा सरकार की लोककल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र व्यक्ति को मिले इसके लिए भी संकल्पबद्ध होकर कार्य करना है।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी राधा मोहन सिंह ने उत्तर प्रदेश के भाजपा कार्यकर्ताओं की प्रंशसा करते हुए कहा कि पूरे देश में संगठनात्मक कार्यो के निर्वहन में उत्तर प्रदेश सदैव प्रथम आता रहा है। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं के परिश्रम का ही परिणाम है कि भाजपा लगातार हर चुनाव में प्रदेश में सफलता हासिल कर रही है। लेकिन हमें अभी और आगे जाना है। इसलिए संगठन की योजनानुसार हमें अपने दायित्वों का निर्वहन करना है।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती डी. पुरंदेश्वरी जी का स्वागत व अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि संगठनात्मक कार्यों के निष्पादन में पार्टी के प्रदेश भर के कार्यकर्ता सदैव अग्रणी रहते हैं। उन्होंने कहा कि आगामी कार्यक्रमों, अभियानों और संगठनात्मक गतिविधियों के संदर्भ में जो भी योजना बनेगी उस पर शत प्रतिशत अमल होगा।

माननीय प्रधानमंत्री जी के जन्मदिवस पर 17 सितम्बर से शुरू हुए सेवा पखवाड़े के अन्तर्गत पार्टी कार्यकर्ताओं ने सेवा कार्यों के माध्यम से पूरे प्रदेश में रचनात्मक कार्यक्रम व अभियान चलाए है। उन्होंने कहा कि अपने परिश्रमी कार्यकर्ताओं के बल पार्टी कार्यकर्ता आगामी नगरीय निकाय के चुनावों और विधान परिषद के चुनावों में भी ऐतिहासिक सफलता हासिल करेगी।

सीमा पर बसा हर गॉव देश का पहला गॉव : मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को छठवीं बार बाबा केदार के और दूसरी बार भगवान बद्नीनाथ के दर्शन किए। इसके बाद भारत–चीन सीमा से महज 24 किलोमीटर दूर देश के आखिरी गांव माणा पहुंचे। त्रिपुंड धारी पीएम मोदी एकदम भक्ति भाव में डूबे नजर आए। मोदी ने इशारों–इशारों में पड़ोसी देश चीन और पाकिस्तान को भारत की ताकत से रूबरू कराया। पीएम मोदी ने माणा से हुंकार भरते हुए कहा, 'माणा गांव भारत के अंतिम गांव के रूप में जाना जाता है लेकिन मेरे लिए सीमा पर बसा हर गांव देश का पहला गांव है। सीमा पर बसे आप जैसे सभी साथी देश के सशक्त प्रहरी है।'पहले देश का आखिरी गांव मानकर जिसकी उपेक्षा की जाती थी, हमने वहां के लोगों की अपेक्षाओं पर फोकस किया।'

बद्रीनाथ धाम से 3 किलोमीटर दूर भारत–चीन सीमा पर माणा गांव में एक जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि केदारनाथ, बदरीनाथ एवं हेमकुंड साहिब को भी सुविधाओं से जोडा जा रहा है। उन्होंने कहा, 'अयोध्या में इतना भव्य राममंदिर बन रहा है और देवी विंध्याचल के कॉरिडोर तक भारत अपने सांस्कृतिक उत्थान का आहवान कर रहा है। आस्था के इन केंद्रों तक पहुंचना अब हर श्रद्धालु के लिए आसान और सुगम हो रहा है ।' उन्होंने कहा कि आजादी के बाद भी देश को गुलामी की मानसिकता ने जकडे रखा था और पिछली सरकारों ने अपनी संस्कृति को लेकर हीन भावना होने के चलते अपने आस्था स्थलों का विकास नहीं किया।

गुलाम मानसिकता ने आस्था के स्थलों को जर्जर स्थिति में ला दिया

उन्होंने कहा, 'गुलामी की मानसिकता ने हमारे आस्था के स्थलों को जर्जर स्थिति में ला दिया। सैकडों वर्षों से मौसम की मार सहते आ रहे पत्थर तथा वहां जाने के रास्ते तक तबाह हो गए । लेकिन उन सरकारों को अपने नागरिकों को इन स्थलों तक जाने की सुविधाएं देना तक जरूरी नहीं लगा ।' इससे पहले, प्रधानमंत्री ने 12.40 किलोमीटर लंबे गोविंदघाट–हेमकुंड साहिब रज्जूमार्ग (रोपवे), 9.7 किमी लंबे गौरीकुंड–केदारनाथ रज्जूमार्ग सहित कुल 3400 करोड रुपये की सडक और रज्जूमार्ग परियोजनाओं का शिलान्यास किया।

'घोर उपेक्षा के बाद भी डटे रहे'

मोदी ने कहा कि घोर उपेक्षा के बावजूद 'न तो हमारे आध्यात्मिक केंद्रों का महत्व कम हुआ और न ही उनके प्रति हमारे समर्पण में कमी आयी।' उन्होंने कहा कि बडे–बुजुर्गों के अलावा नौजवान पीढी के लिए भी इन्हें श्रद्धा का केंद्र बनाने का प्रयास होना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज पूरा देश अपने आध्यात्मिक केंद्रों के विकास को लेकर गर्व से भर गया है और उत्तराखंड में डबल इंजन की सरकार बनने के बाद चारधाम में अब तक 45 लाख श्रद्धालु आए हैं। उन्होंने कहा कि आस्था और आध्यात्म स्थलों के पुनर्निर्माण से रोजगार और लोगों के जीवन के सुविधा संपन्न होने का पक्ष भी जुडा है। उन्होंने कहा, ' जब पहाड पर रेल, रोड और रोपवे पहुंचते हैं तो अपने साथ रोजगार भी लाते हैं और जीवन को जानदार, शानदार और आसान बना देते हैं ।' उन्होंने कहा कि सरकार अब ड्रोन के माध्यम से पहाडों पर सामान पहुंचाने पर काम कर रही है।

देशवासियों से अपील

उन्होंने कहा कि ड्रोन पहाडों में पैदा होने वाली ताजा सब्जी जल्द बडे शहरों में पहुंचा देगी जिससे स्थानीय लोगों की कमाई भी बढेगी। पहाड़ में काम करने वाले स्वयं सहायता समूहों द्वारा उत्पादित नमक, मसाले तथा अन्य वस्तुओं की गुणवत्ता और पैकेजिंग की प्रशंसा करते हुए प्रधानमंत्री ने यहां आने वाले हर तीर्थयात्री से यहां का सामान खरीद कर

साथ ले जाने का आग्रह किया। मोदी ने कहा कि वह चीन सीमा के समीप बसे माणा गांव से देश के 130 करोड़ देशवासियों से प्रार्थना करते हैं कि अपनी यात्रा पर होने वाले खर्च में से कम से कम 5 प्रतिशत धन वह स्थानीय उत्पादों को खरीदने में करें। इस अभियान को 'वोकल फॉर लोकल' की तरह चलाने का आग्रह करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, ' अगर कोई उत्पाद आपके घर में है तो भी दूसरा लेकर जाइए । किसी को भेंट दे दीजिए, लेकिन लेकर जरूर जाइए ।' उन्होंने कहा कि इससे आपको संतोष और आनंद मिलेगा और क्षेत्र के लोगों को रोजी–रोटी मिल जाएगी ।

बढ़ रहा माणा गांव

डिजिटल पेमेंट ले रही हैं। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार प्रदेश में युवाओं को कौशल विकास के लिए आर्थिक मदद दे रही है तथा जल्द ही उनके लिए सीमावर्ती क्षेत्रों में एनसीसी का कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है।

'पहाड़ों में रेल, सडक और हवाई यातायात के बढ़ते कदम

पीएम मोदी ने कहा कि पहाडों की संपर्क की समस्या को दूर करने के लिए भी उनकी डबल इंजन की सरकार उत्तराखंड को मल्टीमोडल कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए हर साधन–रेल, सडक और हवाई यातायात पर काम किया जा रहा है। इस संबंध में हिमाचल वंदे भारत रेलगाडी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में भी ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेल का सपना जल्द साकार होगा। उन्होंने कहा कि संपर्क अच्छा होने से दूरी कम होने के

उन्होंने कहा कि माणा की एक स्थानीय महिला ने उन्हें बताया कि इस बार यात्रा के अच्छा होने से उनका ढाई लाख रूपये का सामान बिक गया। प्रधानमंत्री ने पहाड़ के लोगों के मेहनती होने को उनकी ताकत बताया लेकिन कहा कि पिछली सरकारों ने उनकी इस ताकत को उनके खिलाफ ही इस्तेमाल किया और उन्हें कोई सुविधा नहीं दी। मोदी ने कहा कि लेकिन उन्होंने पहाड़ की चुनौतियों का हल निकालने का प्रयास किया और हर गांव तक बिजली, पानी सहित हर मूलभूत सुविधाएं पहुंचाई। प्रदेश के कोने–कोने में डिजिटल कनेक्टिविटी पहुंचाई। उन्होंने कहा कि वह संसद के अपने कुछ मित्रों को बताना चाहते हैं कि माणा गांव में भी आठवीं कक्षा तक पढी महिलाएं भी

साथ ही उद्योगों को भी बढावा मिलेगा । इस संबंध में उन्होंने कहा कि 2014 के बाद से सीमा सडक संगठन ने देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में 7000 किलोमीटर नई सडकों तथा सैकडों पुलों का निर्माण किया है। उन्होंने कहा कि पहाडी राज्यों की कनेक्टिविटी को बढाने के लिए अब सागरमाला और भारतमाला की तर्ज पर पर्वतमाला का काम आगे बढाया जाएगा । इसके तहत उत्तराखंड और हिमाचल में रज्जूमार्गों का एक बडा नेटवर्क बनना शुरू हो चुका है। सीमावर्ती गांवों के विकास का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उनमें चहलकृपहल बढनी चाहिए और ऐसे गांव बनने चाहिए जिससे उन्हें छोडकर जा चुके लोगों का मन भी वहां लौटने को करे।

केदारनाथ आते ही यहां के कण-कण से जुड़ जाता हूँ : मोदी

नरेंद्र मोदी शुक्रवार को केदारनाथ धाम पहुंचे, जहां उन्होंने 130 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन किया. पीएम ने इस दौरान लोगों को संबोधित भी किया. उन्होंने कहा, आप सभी आदि शंकराचार्य की समाधि के उद्घाटन के साक्षी हैं. उनके भक्त यहां उत्साह के साथ मौजूद हैं. देश के सभी मठ और ज्योतिर्लिंग आज हमारे साथ जुड़े हैं. पीएम मोदी ने कहा कि केदारनाथ आते ही यहां के कण–कण से जुड़ जाता हूं. उन्होंने कहा कि आदि शंकराचार्य की प्रतिमा का दृश्य अद्भुत था. उस समाधि के आगे बैठना दिव्य अनुभूति है. आइए आपको बताते हैं पीएम मोदी के संबोधन की बड़ी बातें...

- सभी मठों, 12 ज्योतिर्लिंगों, अनेक शिवालयों, शक्ति धाम,अनेक तीर्थ क्षेत्रों पर देश के गणमान्य महापुरुष, पूज्य शंकराचार्य परंपरा से जुड़े हुए सभी वरिष्ठ ऋषि, मनीषी और अनेक श्रद्धालु भी देश के हर कोने से केदारनाथ की इस पवित्र भूमि के साथ हमें आशीर्वाद दे रहे हैं।
- हमारे उपनिषदों में, आदि शंकराचार्य जी की रचनाओं में कई जगह नेति–नेति कहकर एक भाव विश्व का विस्तार दिया गया है. रामचरित मानस को भी हम देखें तो इसमें में अलग तरीके से ये भाव दोहराया गया है. रामचरित मानस में कहा गया है–'अबिगत अकथ अपार, नेति–नेति नित निगम कह'.यानी कुछ अनुभव इतने अलौकिक, इतने अनंत होते हैं कि उन्हें शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता. बाबा केदारनाथ की शरण में आकर मेरी अनुभूति ऐसी ही होती है।

विकास परियोजनाओं का उद्घाटन

- मैं दिल्ली में अपने दफ्तर से लगातार केदारनाथ में विकास कार्यों का जायजा लेता रहता था. ड्रोन फुटेज के जरिए मैंने विकास कार्यों की समीक्षा की।
- शंकर का संस्कृत में अर्थ है– "शं करोति सः शंकरः" यानी, जो कल्याण करे, वही शंकर है।
- इस व्याकरण को भी आचार्य शंकर ने प्रत्यक्ष प्रमाणित कर दिया. उनका पूरा जीवन जितना असाधारण था, उतना ही वो जन–साधारण के कल्याण के लिए समर्पित थे।
- एक समय था जब आध्यात्म को, धर्म को केवल रूढ़ियों से जोड़कर देखा जाने लगा था. लेकिन, भारतीय दर्शन तो मानव कल्याण की बात करता है, जीवन को पूर्णता के साथ, समग्र नजरिए में देखता है. आदि शंकराचार्य ने समाज को इस सत्य से परिचित कराने का काम किया।
- चारधाम सड़क परियोजना का काम तेजी से चल रहा है. भविष्य में यहां केदारनाथ जी तक श्रद्धालु केबल कार के जरिए आ सकें, इससे जुड़ी प्रक्रिया भी शुरू हो गई है. यहां पास में ही पवित्र हेमकुंड साहिब जी भी हैं. हेमकुंड साहिब जी के दर्शन आसान हों, इसके लिए वहां भी रोप–वे बनाने की तैयारी है।
- यूपी में काशी का कायाकल्प हो रहा है तो वहीं मथुरा–वृंदावन में भी विकास कार्यों पर जोर है. दिल्ली–देहरादून एक्सप्रेस वे बनने से यात्रियों के लिए सफर और सुगम हो जाएगा. आने वाले वर्षों में उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था बदलने वाली है. पीएम मोदी ने कहा कि उत्तराखंड में पलायन रोकने की योजना पर काम हो रहा है. अब पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी पहाड़ वालों के काम आएगी. यह दशक नौजवानों का है।
- अभी दो दिन पहले ही अयोध्या में दीपोत्सव का भव्य आयोजन पूरी दुनिया ने देखा. आज अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर पूरे गौरव के साथ बन रहा है, अयोध्या को उसका गौरव वापस मिल रहा है. भारत का प्राचीन सांस्कृतिक स्वरूप कैसा रहा होगा, आज हम इसकी कल्पना कर सकते हैं. अब देश अपने लिए बड़े लक्ष्य तय करता है, कठिन समय सीमाएं निर्धारित करता है, तो कुछ लोग कहते हैं कि इतने कम समय में ये सब कैसे होगा! होगा भी या नहीं होगा! तब मैं कहता हूं कि – समय के दायरे में बंधकर भयभीत होना अब भारत को मंजूर नहीं है।
- उत्तराखंड ने कोरोना के खिलाफ लड़ाई में जिस तरह का अनुशासन दिखाया, वो भी बहुत सराहनीय है. भौगोलिक कठिनाइयों को पार कर आज उत्तराखंड ने, उत्तराखंड के लोगों ने 100 प्रतिशत सिंगल डोज़ का लक्ष्य हासिल कर लिया है. ये उत्तराखंड की ताकत है, सामर्थ्य है।

केजरीवाल सरकार, झूठी भ्रष्टाचारी घोटालों की सरकार : नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने आज रविवार को नई दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में आयोजित विशाल 'पंच परमेश्वर' रैली को संबोधित किया और पार्टी कार्यकर्ताओं को भाजपा का आधार स्तंभ बताते हुए दिल्ली की झूठी एवं भ्रष्टाचारी अरविंद केजरीवाल सरकार पर जोरदार प्रहार किया। कार्यक्रम में दिल्ली के सभी 13,000 से अधिक बूथों से पंच परमेश्वर शामिल हुए थे। पंच परमेश्वर रैली में दिल्ली के कोने–कोने से इतने भाजपा कार्यकर्ता शामिल हुए कि रामलीला मैदान में मानो जन–सैलाब उमड़ पड़ा। यह कोई कार्यकर्ता सम्मेलन नहीं बल्कि जन–सभा सा प्रतीत हो रहा था। कार्यक्रम में मंच पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता, दिल्ली के भाजपा प्रभारी एवं पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बैजयंत जय पांडा, सह–प्रभारी श्रीमती अलका गुर्जर, संगठन मंत्री श्री सिद्धार्थन, दिल्ली विधान सभा में विपक्ष के नेता श्री रामबीर सिंह बिधूड़ी, वरिष्ठ भाजपा नेता श्री विजय गोयल, दिल्ली से भाजपा के सांसद डॉ हर्षवर्धन, श्री रमेश बिधूड़ी, श्री मनोज तिवारी, श्री गौतम गंभीर, श्री हंसराज हंस, प्रवेश साहिब सिंह वर्मा, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री सतीश उपाध्याय, पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री विजेंद्र गुप्ता श्री श्याम जाजू एवं श्री विजेंद्र गुप्ता सहित पार्टी के कई वरिष्ठ नेता एवं पार्टी पदाधिकारी उपस्थित थे।

केजरीवाल सरकार घोटालों की सरकार

आदरणीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने पंच परमेश्वर रैली में आये हुए सभी पार्टी कार्यकर्ताओं का हृदय से स्वागत और अभिनंदन किया और उनसे दिल्ली से पहले नगर निगम चुनाव में, फिर आने वाले विधान सभा चुनाव में झूठी, भ्रष्टाचारी और जनता से विश्वासघात करने वाली अरविंद केजरीवाल सरकार को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि केजरीवाल सरकार घोटालों की सरकार है। केजरीवाल सरकार ने एक के बाद एक घोटाले किये। हर विभाग में भ्रष्टाचार किया। अरविंद केजरीवाल, आपने दिल्ली का हाल बेहाल कर दिया है। दिल्ली की जनता परिवर्तन के लिए तैयार है। दिल्ली नगर निगम चुनाव और फिर दिल्ली विधान सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की शानदार विजय और आम आदमी पार्टी की करारी हार तय है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक पार्टियां तो रामलीला मैदान में जनसभा करने से भी कतराती है लेकिन हमारे कार्यकर्ताओं के इस पंच परमेश्वर रैली ने इसे जनसभा में तब्दील कर दिया है।

केजरीवाल सरकार का शराब घोटाला

शराब घोटाले को लेकर अरविंद केजरीवाल पर करारा हमला करते हुए माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि सत्ता में आने से पहले केजरीवाल कहते थे कि शराबबंदी करेंगे। ये बहुत बुरी चीज होती हैं। कहते थे कि दुकानें कम करूंगा, गली–मोहल्लों से शराब के दुकानों को बंद करूंगा। जैसे ही सत्ता में आये, हर गली–मोहल्ले में शराब की दुकानें खोल दी और युवाओं के भविष्य को बर्बाद करने का अपराध किया। पहले दिल्ली में शराब बिक्री पर ठेकेदारों को केवल 2% कमीशन मिलता था, केजरीवाल सरकार ने उसे बढ़ा कर 12% कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जहां शराब बिक्री के कमीशन में ठेकेदारों को केवल 400 करोड़ रुपये जाते थे, वहां कमीशन में लगभग 2,400 करोड़ रुपये जाने लगे। स्टिंग ऑपरेशन में यह सामने आया है कि शराब ठेकेदारों को 12%कमीशन देकर उनसे 6 फीसदी कमीशन का रुपया अवैध तरीके से आम आदमी पार्टी और उसके नेताओं ने अपने लिए ले लिया। मतलब ये कि जो पैसे सरकार के खजाने में जाने चाहिए थे, वे अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी की झोली में आ गए। ये सच्चाई स्टिंग से सामने आई है। ऐसे घोटालेबाजों को सत्ता में बने नहीं रहना चाहिए।

केजरीवाल सरकार का एजुकेशन स्कैम

दिल्ली की केजरीवाल सरकार के शिक्षा मॉडल पर निशाना साधते हुए श्री नड्डा ने कहा कि अरविन्द केजरीवाल, उनके मंत्री और आम आदमी पार्टी दिल्ली के शिक्षा मॉडल को लेकर तरह–तरह के दावे करती है, कहती है कि दिल्ली के शिक्षा मॉडल की तारीफ़ दुनिया भर में हो रही है लेकिन सच्चाई इसके ठीक उलट है। दिल्ली में स्कूलों में लगभग 2526 कमरे और 160 टॉयलेट्स बनाने थे जिसके लिए 860 करोड़ रुपये का टेंडर जारी हुआ था। सेन्ट्रल विजिलेंस कमीशन ने अपने ऑब्जरवेशन में एक क्लास रूम की निर्माण लागत 5 लाख रुपये आंकी जबकि अरविन्द केजरीवाल सरकार ने ठेकेदारों को लगभग एक क्लास के लिए 33 लाख रुपये का भुगतान किया। साथ ही, निर्माण और कार्यों में भी जम कर धांधली की गई। जीएफआर और सीपीडब्ल्यूडी वर्क्स मैनुअल का खुला उल्लंघन किया गया। कहीं–कहीं तो कमरे भी पक्के नहीं बने, केवल सेमी परमानेंट स्ट्रक्चर खड़ा कर दिया। ये भाजपा या मेरा आरोप नहीं है बल्कि सेन्ट्रल विजिलेंस कमीशन का ऑब्जरवेशन है। एक बात और बहुत गंभीर है कि आज दिल्ली के लगभग 745 स्कूलों में प्रिंसिपल ही नहीं हैं। एक अध्ययन के मुताबिक़ दिल्ली के लगभग 70 प्रतिशत स्कूलों में सायंस और कॉमर्स की पढ़ाई की व्यवस्था ही नहीं है। अरविन्द केजरीवाल कहते थे कि गरीबों बच्चे पढ़ कर डॉक्टर बनेंगे। क्या बच्चे इस तरह पढ़ कर डॉक्टर बनेंगे? अरविन्द केजरीवाल जी, झूठ बोलना, लोगों को बरगलाना और गलत बातों के जरिये समाज को गुमराह करना

आपकी फितरत बन चुकी है।

दिल्ली की केजरीवाल सरकार का ट्रांसपोर्ट घोटाला

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने केजरीवाल सरकार के ट्रांसपोर्ट घोटाले पर भी जम कर बरसते हुए कहा कि जब अरविन्द केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री बने थे, तब दिल्ली में बसों की संख्या 6,600 थी। कई अध्ययनों में दिल्ली में लगभग 15,000 बसों की जरूरत बताई गई थी। 2015 में अरविन्द केजरीवाल जी ने दिल्ली में 11,000 बसों को उतारने का वादा भी किया था जबकि सच्चाई यह है कि दिल्ली में केवल 3,680 बसें ही रह गई हैं। केजरीवाल सरकार ने डीटीसी की 1,000 बसों की खरीद और मेंटेनेंस में भी भारी अनियमितता की। इन बसों की खरीद के लिए लगभग 850 करोड़ रुपये की डील हुई जबकि इन बसों के मेंटिनेंस के लिए 3,500 करोड़ रुपये की डील की गई। ये अलग बात है कि जब हमारे नेताओं ने इस पर आवाज उठाई और इस घोटाले की सच्चाई बाहर आनी शुरू हुई तो टेंडर रोक दिया गया लेकिन अरविन्द केजरीवाल जी की नीयत और उनकी सरकार की सच्चाई तो जनता के सामने आ ही गई।

केजरीवाल सरकार में बिजली घोटाला

श्री नड्डा ने कहा कि बिजली बिल में भी अरविन्द केजरीवाल सरकार ने जम कर भ्रष्टाचार किया। दिखावे को तो केजरीवाल सरकार ने मुफ्त बिजली का दावा किया जबकि अरविन्द केजरीवाल सरकार की शह पर बिजली कंपनियों ने दिल्लीवासियों से सरचार्ज के नाम पर लगभग 50 हजार करोड़ रुपए वसूले। इसकी सीएजी जांच भी नहीं हुई। बिजली कंपनियों में अरविन्द केजरीवाल जी ने अपने लोगों को डायरेक्टर के रूप में बिठा कर भारी घोटाला किया। जिन बिजली कंपनियों पर दिल्ली सरकार का बड़ा बकाया था, उस पर ब्याज की दर 18 प्रतिशत से घटाकर 12 कर दी गई जिससे सरकारी खजाने को भारी आर्थिक नुकसान हुआ। ऐसे भ्रष्टाचारियों को सत्ता में रहने का कोई हक़ नहीं है।

दिल्ली जल बोर्ड में घोटाला और हेल्थ स्कैम

दिल्ली जल बोर्ड में हुए घोटाले को लेकर अरविन्द केजरीवाल पर निशाना साधते हुए माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि दिल्ली जल बोर्ड पहले लगभग 500 करोड़ रुपये से अधिक के लाभ में था लेकिन आज यह करोड़ों रुपये के घाटे में चला गया है। सीएजी ने 17 चिट्ठियां लिखी हैं लेकिन अब तक लगभग 57,000 करोड़ रुपये के घाटे और ऋण की देनदारियों की ऑडिट भी नहीं हुई है। दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य घोटाले से तो सब लोग वाकिफ हैं ही। मोहल्ला क्लीनिक के नाम पर जम कर भ्रष्टाचार हुआ। कोरोना काल में किस तरह अरविन्द केजरीवाल अपनी जिम्मेदारियों से भागती रही, यह हम सबने देखा है। अरविन्द केजरीवाल ने दिल्ली में कई अस्पताल बनाने का वादा किया था लेकिन अरविन्द केजरीवाल सरकार ने एक भी नया हॉस्पिटल नहीं बनाया। प्रधानमंत्री जी देश के 50 करोड़ से अधिक लोगों को आयुष्मान भारत का लाभ दे रहे हैं लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि केजरीवाल सरकार दिल्ली में गरीबों को इस योजना के लाभ से वंचित रखने का पाप कर रही है।

भ्रष्टाचार में अरविन्द केजरीवाल सरकार ने कांग्रेस का भी रिकॉर्ड तोड़ा

दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार पर हमला जारी रखते हुए श्री नड्डा ने कहा कि अरविन्द केजरीवाल और आम आदमी पार्टी लोकपाल बिल की मांग को लेकर धरना देते थे, अनशन पर बैठते थे। बड़ी–बड़ी बातें करते थे। कहते थे कि सरकार में आयेंगे तो स्वच्छ प्रशासन देंगे। सत्ता में आने के बाद अरविन्द केजरीवाल ने ऐसा स्वच्छ प्रशासन दिया कि कुशासन के लिए बदनाम कांग्रेस पार्टी भी शरमा गई। कमीशन के लिए तो कांग्रेस बदनाम थी लेकिन अरविन्द केजरीवाल की सरकार ने तो कांग्रेस का भी रिकॉर्ड तोड़ दिया। केजरीवाल सरकार के तीन–तीन मंत्री जेल में हैं। इनमें से भी कोई किसी जांच एजेंसी के कारण नहीं बल्कि अदालत और कानून के कारण जेल में बंद हैं। इनके पांच–पांच विधायक जेल जाकर आये हैं और अब बेल पर हैं। स्वच्छ प्रशासन का दावा करने वाले जेल और बेल के बीच में घूम रहे हैं। ये है इनकी ईमानदारी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हो रहा देश का चहुंमुखी विकास

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में चहुँमुखी विकास हो रहा है। दिल्ली में श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने विकास के कई कार्य किए, लेकिन नाकारा केजरीवाल सरकार दिल्ली के विकास कार्यों में बाधा डालने का काम करती रही है। भारतीय जनता पार्टी आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत', 'सबका साथ–सबका विकास' और अंत्योदय के सिद्धांत के मूल मंत्र पर काम करती है। हम सब भाग्यशाली हैं कि हम भाजपा के कार्यकर्ता हैं। हमारे पास आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जैसा नेतृत्व है, परिश्रम की पराकाष्ठा करने वाले कार्यकर्ता हैं और देश के गाँव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, आदिवासी, पिछड़े, युवा एवं महिलाओं के कल्याण करने का समर्पण भी।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि 2019 से देश में जितने भी चुनाव हुए, उनमें से अधिकतर चुनावों में भाजपा को विजयश्री मिली। बिहार, असम, पुदुच्चेरी, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में हमारी सरकार बनी। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और मणिपुर में तो हमें रिकॉर्ड तोड़ जीत मिली। साथ ही पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक हुए स्थानीय निकाय के चुनावों में भी हमें बंपर जीत मिली। कोरोना काल में सेवा ही संगठन के तहत आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ताओं ने सेवा भाव, संतुलन, संयम, समन्वय, सकारात्मक सोच, सद्‌भावना, संवाद के साथ मानवता की जी–जान से सेवा की। हमारी हर योजना के केंद्र में गरीब कल्याण ही निहित है। देश के लगभग 11 करोड़ किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ मिल रहा है, लगभग 23 करोड़ किसानों को स्वायल हेल्थ कार्ड मिला है और ओबीसी कमीशन को संवैधानिक दर्जा मिला है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने देश में रिपोर्ट कार्ड की संस्कृति प्रस्थापित की है।

एमसीडी चुनाव में जीत के बाद भाजपा मनाएगी विजय का उत्सव

श्री नड्डा ने कहा कि भाजपा ने एमसीडी में काफी कार्य किया है। 2012 में जब एमसीडी का विभाजन हुआ था, तब से तीनों नगर निगमों के काम–काज में काफी दिक्कत आ रही थी। तीनों नगर निगम विभाजन के बाद से फंड की कमी से जूझ रहे थे, विकास की गति भी बाधित हो रही थी। अब हमने तीनों नगर निगमों को एक बनाया है। निगर निगम चुनाव के बाद हम सब पुनः विजय उत्सव मनाएंगे।

सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं में पसमांदा समाज की भागीदारी

अल्पसंख्यक मोर्चा के संयोजन में आज लखनऊ के क्राइस्ट चर्च कॉलेज में पसमांदा बुद्धिजीवी सम्मेलन आयोजित हुआ। जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक, जम्मू कश्मीर से राज्यसभा सदस्य श्री गुलाम अली खटाना, राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा आदरणीय श्री साबिर अली और प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री श्री दानिश आजाद अंसारी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

पसमांदा बुद्धिजीवी सम्मेलन में उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक ने स्व. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, स्व. पंडित दीनदयाल उपाध्याय और देश के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की प्रतिमा पर पुष्पांजलि करते हुए दीप प्रज्जवलित कर सम्मेलन का शुभारंभ किया।

पसमांदा बुद्धिजीवी सम्मेलन, लखनऊ

उन्होंने कांग्रेस ,सपा और बसपा को जब भी सत्ता मिली आपको मुख्यधारा से दूर करने का काम किया। लेकिन मुस्लिम समाज अब समझ चुका कि कौन उनके हित में सोचता है और कौन अहित में। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार हो या प्रदेश की योगी सरकार हमारी देश –प्रदेश की सरकार जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से अल्पसंख्यक समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित कर रही है। सबका साथ सबका विकास के मूल मंत्र के साथ हर वर्ग के लिए एक समान कार्य कर रही है ।

देश में साढ़े चार करोड़ लाभार्थी वर्ग अल्पसंख्यक समाज से ही आता है। इस आंकड़े से ही पता लगता है कि सरकारी योजनाओं में किस तेजी के साथ पसमांदा समाज की भागीदारी बढ़ी है । उन्होंने कहा कि राजनीति में बहुत सारे ऐसे दल है जो मुस्लिम खासकर पसमांदा समाज को थोक का वोटर मानते थे। उनके लिए पसमांदा समाज केवल सत्ता को सीढ़ी भर था। लेकिन भाजपा ने अपनी योजनाओं के वितरण में बिना किसी भेदभाव के लोगों का जीवन स्तर को ऊपर उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। कोरोना के समय खाद्यान्न वितरण का मसला हो या प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि देने का या बच्चों की शिक्षा का मामला हो, रसोई गैस की बात हो सरकार ने आगे बढ़कर सबके लिए कार्य किया है। न किसी समाज के साथ कोई भेदभाव न ही पक्षपात। भारतीय जनता पार्टी मूल रूप

से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के सपने को लेकर आगे बढ़ रही है। केंद्र की मोदी सरकार हो या प्रदेश की योगी सरकार लक्ष्य अंत्योदय– प्रण अंत्योदय ही कार्यशैली में झलकता है।

वहीं राजनीतिक दल के रूप में यह देश का पहला ऐसा सम्मेलन है जिसके मुस्लिम समाज के वंचित, शोषित और पिछड़ों से सीधे जुड़ने को प्रयास हो रहा है। हमारा प्रण भी अंत्योदय और लक्ष्य भी अंत्योदय है। उन्होंने आगे कहा कि यह आयोजन अंत्योदय के लक्ष्य का एक पायदान भर है।

जम्मू कश्मीर से राज्यसभा सदस्य श्री गुलाम अली खटाना ने मंच से मुस्लिमों में पसमांदा समाज को शिक्षित और सुशिक्षित होने का आहवान किया साथ ही बताया कि कैसे भारत के प्रमुख हिस्से कश्मीर को केंद्र से भेजा जाने वाला आर्थिक सहयोग डकारने के लिए 370 का उपयोग किया जाता रहा जिसे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने हटाकर प्रदेश को विकास की राह से जोड़ दिया है।

अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री साबिर अली ने अपने संबोधन में कहा कि इससे पहले की सरकारों ने पसमांदा समाज से मुनाफिक की तरह बर्ताव किया है। उन्होंने केवल बटवारे की राजनीति की है और समाज के वंचित, शोषित तबके को और पीछे ही धकेला है। अब भाजपा सरकार में नया बदलाव आया है। अल्पसंख्यक समुदाय को जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में पसमांदा समाज को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए मुहिम चलाई जा रही है।

मुझे कहने में कोई गुरेज नहीं है इससे पहले की सरकारों ने पूरे मुस्लिम समुदाय को 70 सालों तक भाजपा के नाम से डराकर केवल बेवकूफ बनाया है। यही विपक्षी दल कहा करते थे भाजपा की सरकार आएगी तो मुस्लिम दर बदर हो जाएगा लेकिन पिछले 8 सालों से मुस्लिम समाज देख रहा है कि किस तरह से डर का बाजार सजाया गया था। यही डर दिखाकर मुस्लिम समाज के तकरीबन 80 फीसदी पसमांदा समाज को वोट बैंक बनाकर रखा गया था। लेकिन भाजपा की सरकार ने दिखा दिया है किस तरह से जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से सरकार उनके जीवन स्तर को उठा रही है।

उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री श्री दानिश अंसारी ने अपने संबोधन में कहा कि अब प्रदेश मे न दंगा होता है और ना ही बहू बेटियों को अपनी सुरक्षा का डर है। वहीं जनकल्याणकारी योजनाओं में भी अल्पसंख्यक समुदाय के पसमांदा समाज को भागीदार बनाया जा रहा है। प्रदेश को राइनी, सैफी, कुरैशी, अंसारी, कस्सार, गुर्जर, मलिक, जाट समेत तमाम बिरादरिंया भाजपा सरकार में अपने उत्थान की ओर बढ़ रही है। भाजपा के लिए यह सिर्फ वंचित समाज से आने वाले देश के नागरिक है जिन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ना है। उनका जीवन स्तर सुधारना है। उन्हें अंत्योदय के लक्ष्य के साथ लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदार ही नहीं जिम्मेदार भी बनाना है।

प्रदेश अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष श्री कुंवर बासित अली ने अपने संबोधन में कहा कि प्रदेश में पहले लड़ाने वालों की भरमार थी अब विकास के रास्ते पर ले जाने वालों की भरमार है। प्रदेश में भाजपा सरकार के बनने के बाद कोई भी दंगा नहीं हुआ साथ ही क़ानून व्यवस्था चाक चौबंद है। अब हाल यह है कि अब बहू बेटी घर से बाहर बिना डर के आ जा सकती है और परिवार भी निश्चिंत होकर कहता है कि अब योगी जी की सरकार है। उन्होने आगे कहा कि भारतीय जनता पार्टी राजनीति को सेवाधर्म मानती है। यही कारण है कि विभेद किए बिना सबको जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। मुस्लिम समुदाय का दलित वंचित पसमांदा समाज बखूबी पहचानता है। किसने उन्हें बरगलाया है और किसने उसे विकास से जोड़ा है। उन्होंने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी हमेशा गरीब वंचित, शोषित के उत्थान की बात कहते हैं। जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से उनके जीवन स्तर को ऊपर का उठाने कार्य करते रहे हैं। उन्हीं के पदचिन्हों पर चलते हुए भाजपा प्रदेश अल्पसंख्यक मोर्चा, मुख्यधारा से वंचित ,पिछड़े मुस्लिम समाज को विकास के साथ जोड़ने का कार्य कर रहा है।

‘सेवा पखवाड़ा’ संपन्न हुआ

2 अक्टूबर को समाप्त हुए ‘सेवा पखवाड़ा’ के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की, जिसमें मुख्य रूप से रक्तदान शिविर, मुफ्त स्वास्थ्य जांच शिविर, दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग एवं उपकरण प्रदान करना और टीबी रोगियों को गोद लेना शामिल था

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन 17 सितंबर को ‘सेवा पखवाड़ा’ का शुभारंभ किया, जिसके तहत पार्टी ने देश भर में विभिन्न सेवा कार्यक्रमों का आयोजन किया। 2 अक्टूबर को समाप्त हुए ‘सेवा पखवाड़ा’ के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने विभिन्न कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक अपनी भागीदारी सुनिश्चित की, जिसमें मुख्य रूप से रक्तदान शिविर, मुफ्त स्वास्थ्य जांच शिविर, दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग एवं उपकरण प्रदान करना और टीबी रोगियों को गोद लेना शामिल था। रचनात्मक सेवा कार्य के तहत स्वच्छता अभियान, पौधारोपण अभियान, जल संरक्षण के लिए संवाद और जिला व मंडल स्तर पर ‘वोकल फॉर लोकल’ अभियान चलाए गए। इसके अलावा, विभिन्न स्थानों पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की जीवन यात्रा को दर्शाने वाली फोटो प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया।

सेवा कार्यक्रम

सेवा पखवाड़ा के दौरान देश भर में 2,572 स्थानों पर रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें 1,84,421 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। स्वास्थ्य जांच शिविरों की बात करें तो कुल 5,520 शिविरों का आयोजन किया गया, जिनमें 6,00,733 व्यक्तियों की निःशुल्क जांच की गई। वहीं, पार्टी के एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के तहत पार्टी कार्यकर्ताओं ने 25,834 टीबी रोगियों को गोद लिया। पार्टी कार्यकर्ता अगले एक वर्ष के दौरान इन रोगियों की जरूरतों का ख्याल रखेंगे और उन्हें पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। सेवा कार्यक्रम के दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं ने कुल

‘सेवा पखवाड़ा’ के दौरान आयोजित कार्यक्रम

17 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2022

रक्तदान शिविर	2,572
कुल एकत्रित रक्त यूनिट	1,84,421
निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर	5,520
व्यक्ति की जांच की गई	6,00,733
टीबी मरीजों को गोद लिया गया	25,834
दिव्यांगजनों के लिए आयोजित कार्यक्रम	476
कृत्रिम अंग और अन्य उपयोगी उपकरण प्रदान किए गए	48,646
स्वच्छता अभियान का आयोजन	21,738
सरोवरो की सफाई	8,241
पौधारोपण	23,81,070
जल संरक्षण संवाद	9,63,067
‘विविधता में एकता’ कार्यक्रम	1,253
फोटो प्रदर्शनी	1,777
मोदी @ 20 बुक स्टॉल	1,374

सेवा पखवाड़ा के प्रमुख बिंदु

* उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक 2,93,047 शुभकामना एवं अभिनंदन पत्र प्रधानमंत्रीजी को भेजे गए।
* देशभर में आयोजित रक्तदान शिविरों में सबसे अधिक रक्त यूनिट संग्रह राजस्थान से 32,864 यूनिट, गुजरात से 26,553 यूनिट, उत्तर प्रदेश से 24,410 यूनिट और कनार्टक से 17,758 यूनिट रहा।
* मध्य प्रदेश में अधिकतम 15,32,146 पौधारोपण किया गया।
* गुजरात में 743 स्थानों पर 74,248 बालिकाओं (उम्र 12–20) की हीमोग्लोबिन जांच की गई और राज्य की 2500 महिला मोर्चा कार्यकर्ताओं ने 66 किलोमीटर समुद्र तट की सफाई की।
* उत्तर प्रदेश में कुल 9,946 टीबी रोगियों को गोद लिया गया।
* स्वच्छता अभियान के तहत कुल 3,24,113 भाजपा कार्यकर्ताओं ने देशभर में विभिन्न स्थानों पर श्रमदान किया।
* राजस्थान में 273 और कर्नाटक में 168 स्थानों पर 'विविधता में एकता' कार्यक्रम आयोजित किए गए।
* सेवा पखवाड़ा के तहत 32 राज्यों के सोशल मीडिया मंचों पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित डिजिटल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

2,78,552 टीकाकरण केंद्रों का दौरा किया और वहां सेवा कार्य किया।

दिव्यांगजनों के लिए 476 स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें 48,646 विकलांग व्यक्तियों को कृत्रिम अंग और अन्य उपयोगी उपकरण प्रदान किए गए।

रचनात्मक सेवा कार्यक्रम

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'स्वच्छ भारत' के सपने को आगे बढ़ाते हुए पार्टी कार्यकर्ताओं ने कुल 21,738 स्थलों पर स्वच्छता अभियान चलाया। अभियान के दौरान 8,241 सरोवरों की सफाई की गई और 3,24,113 कार्यकर्ताओं ने स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के श्रमदान दिया। पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए पार्टी कार्यकर्ताओं ने कुल 23,81,070 पौधे लगाए और उनकी सुरक्षा के लिए 4,86,290 पौधा पालकों को नियुक्त किया गया। इसके अलावा, पार्टी कार्यकर्ताओं ने जल संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए 9,63,067 घरों का दौरा कर, संवाद स्थापित किया और नागरिकों को जल संरक्षण के लाभों से अवगत कराया।

रचनात्मक सेवा कार्यक्रम को गति देते हुए 1,253 स्थानों पर 'विविधता में एकता' जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए। देश को आत्मनिर्भर बनाने के प्रधानमंत्री के प्रयास 'वोकल फॉर लोकल' को बढ़ावा देते हुए पार्टी के 53,760 पदाधिकारियों ने जिला/मंडल स्तर पर स्थानीय उत्पादों की खरीदारी की।

प्रदर्शनियां और अन्य कार्यक्रम

देशभर में प्रधानमंत्री के व्यक्तित्व और कृतित्व की झलक देते हुए 1,777 प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। इस दौरान इन प्रदर्शनियों में 8,09,535 लोगों की उपस्थिति दर्ज की गई। प्रधानमंत्री के जीवन पर आधारित प्रसिद्ध पुस्तक मोदी/20 को नागरिकों तक आसानी से पहुंचाने के लिए देशभर में 1,374 स्थानों पर इस पुस्तक के स्टॉल लगाए गए। सेवा पखवाड़ा के दौरान 2,462 बौद्धिक सम्मेलन आयोजित किए गए और इन सम्मेलनों में 1,68,846 बुद्धिजीवियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। पूरे सेवा पखवाड़ा के दौरान देशभर से कुल 8,36,875 शुभकामना एवं अभिनंदन संदेश प्रधानमंत्री को भेजे गए।

(विभिन्न राज्यों से 08 अक्टूबर, 2022 तक प्राप्त आंकड़ों पर आधारित)

दुनिया के निवेशकों के लिए अच्छा वातावरण : पुरंदेश्वरी

भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती डी. पुरंदेश्वरी ने कहा कि भाजपा का संगठन और सरकार दोनो ही आमजनमानस की सेवा के भाव के साथ कार्य करते है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सबका साथ–सबका विकास और सबका विश्वास के मूलमंत्र पर कार्य करते हुए सरकार की सभी योजनाओं का लाभ अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को मिले ऐसी योजनाऐं बनायीं। उन्होंने कहा कि देश एवं दुनिया के निवेशकों के लिए उत्तर प्रदेश में अच्छा वातावरण बना है। उन्होंने कहा कि वह जमाना गया जब कभी उत्तर प्रदेश में अपहरण उद्योग का दौर था और निवेशको को भय सा लगता था।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी जी के साथ पत्रकार वार्ता में श्रीमती डी. पुरंदेश्वरी ने कहा कि भाजपा सरकार में परिवारवाद और भ्रष्टाचार नहीं है। इसीलिए जनता ने हमें आशीर्वाद देकर दूसरी बार सत्ता सौंपी ताकि हम लोककल्याण के पथ पर कार्य करते रहे। उन्होंने कहा कि भाजपा अन्त्योदय के आधार पर काम कर रही है। अन्त्योदय का मतलब समाज के अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को सभी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार लगातार गरीब कल्याण के कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कोरोना की चुनौतियों को भी अवसर में बदला। डी. पुरंदेश्वरी ने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार जन सरोकारों के लिए हैं और कोरोनाकाल में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी साबित किया कि चुनौतियों को किस तरह से अवसर में बदलकर किस तरह सत्ता को जनता की सेवा का माध्यम बनाया जा सकता है।

डी. पुरंदेश्वरी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार से पहले की परिस्थितियों को ध्यान दीजिए तो स्पष्ट हो जाएगा की पहले उत्तर प्रदेश में एक बार जिसकी सरकार बनती थी दोबारा उसकी सरकार नहीं आती थी। लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य में पूर्वांचल एक्सप्रेस–वे, बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस–वे के निर्माण सहित पूरे प्रदेश में बेहतरीन इंफ्रास्ट्रकचर को विकसित किया गया। राज्य की बेहतरीन कानून व्यवस्था का परिणाम है कि आज उत्तर प्रदेश में महिलाएं खुद को सुरक्षित समझती है। राज्य के अच्छे माहौल का ही परिणाम है कि प्रदेश में तेजी से निवेश हो रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हमारी सरकार के कार्यों के बल पर हमें आगे भी जनता का आशीर्वाद व समर्थन मिलता रहेगा।

उत्तर प्रदेश के अपने तीन दिवसीय प्रवास को लेकर राष्ट्रीय महामंत्री जी ने कहा कि संगठन की योजनानुसार उत्तर प्रदेश के प्रवास पर आई हूं। प्रवास के दौरान संगठन और सरकार के साथ अलग–अलग कई बैठकें की है। भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा कि प्रदेश में सरकार और संगठन के बीच बेहतर समन्वय का ही परिणाम है कि सरकार की जन कल्याणकारी नीतियों को हम मजबूती के साथ जन–जन तक पहुंचा रहे हैं।

मातृशक्ति आत्मनिर्भर हुई : भूपेन्द्र सिंह

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि भाजपा सरकार में मातृशक्ति सशक्त व आत्मनिर्भर हुई है। महिलाओं को सबसे ज्यादा सम्मान भाजपा में ही मिल रहा है। महिलाएं आज हर क्षेत्र में बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। इससे देश को मजबूती मिल रही है। प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेंद्र सिंह चौधरी ने सहजनवा नगर पंचायत स्थित सभागार में महिला मोर्चा के प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा संगठन का कार्यकर्ता ही रीढ़ है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि की पथिक है जिसके मूल में यत्र है। भाजपा ही एक मात्र राजनीतिक के अपार अवसर हैं। भाजपा की योगदान है। उन्होंने कहा कि नेतृत्व की केन्द्र सरकार व के नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार जानकारी तथा भाजपा की पहुंचाकर भाजपा महिला मोर्चा की

भाजपा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पथ नार्यस्तु पूजयन्ते का विचार निहित दल है जिसमें मातृशक्ति को नेतृत्व विकास यात्रा में मातृशक्ति का बड़ा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी की जनकल्याणकारी योजनाओं की विचारधारा को माताओं–बहनों तक कार्यकर्ताओं ने आधी आबादी तक पार्टी को पहुंचाने में अथक परिश्रम किया है। श्री चौधरी ने कहा कि श्री अटल बिहारी बाजपेई जी जैसे मनीषियों के त्याग और तपस्या की बदौलत ही भाजपा आज दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी हैं। उन्होंने लोकसभा और विधानसभा चुनाव में पूर्व में मिली ऐतिहासिक सफलता की चर्चा करते हुए आगामी नगर निकाय चुनाव और 2024 में होने लोकसभा चुनाव में जीत का मंत्र भी दिया।

सामाजिक समरसता का व्यवहार : भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना समाज का संगठित करने के उद्देश्य से हुई थी. संघ संस्थापक डॉ केशव बलिराम हेडगेवार ने भारत की परतंत्रता पर गहन शोध किया था.वह सक्रिय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे. देश को स्वतंत्रत कराना उनका उद्देश्य था. वह उन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में शामिल थे,जिन्हें क्रांतिकारियों और कांग्रेस के नेताओं के साथ कार्य करने का अनुभव था.इन सभी लोगों के तात्कालिक लक्ष्य से वह सहमत थे,उसमें सहभागी थे. देश को स्वतंत्रत कराना तात्कालिक उद्देश्य था. किन्तु इसके साथ ही डॉ हेडगेवार शक्तिशाली समाज और राष्ट्र का निर्माण चाहते थे. उनका मानना था कि सामाजिक एकता और राष्ट्रीय स्वाभिमान का भाव कमजोर होने से देश को परतंत्रता झेलनी पड़ी. विदेशी आक्रांता इसी कमजोरी के कारणो सफल हुए थे. अन्यथा भारत की तरफ देखने का इनमें साहस नहीं होता. डॉ हेडगेवार भारत को एक बार फिर विश्व गुरु के पद पर आसीन देखना चाहते थे. उन्होने परम वैभवशाली भारत का सपना देखा था. इसको साकार करने के लिए ही उन्होने संघ की स्थापना की थी. संघ की शाखा में संगठन और संस्कार का भाव जागृत होता है. यहां से निकल कर स्वंय सेवक समाज जीवन के अनेक क्षेत्रों में विलक्षण कार्य कर रहे हैं. इसके माध्यम से समरसता स्थापित हो रही है.

डॉ0 दिलीप अग्निहोत्री

सेवा,आरोग्य प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण प्राकृतिक कृषि, किसान मजदूर, युवा,महिला सशक्तीकरण, शिक्षा, वनवासी आदि अनेक क्षेत्रों में संघ की प्रेरणा से निस्वार्थ भाव से कार्य चल रहा है. प्रयाग राज में संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल की बैठक हुई. इसमें ऐसे अनेक विषयों पर व्यापक विचार–विमर्श किया गया. विशेष कार्यक्रमों के वृत्त रखे गये। इनमें सरसंघचालक की पिछले सितंबर में हुई मेघालय यात्रा का विषय भी शामिल था। इस यात्रा में मेघालय के खासी,जयंतिया व गारो लोगों द्वारा पूज्य सरसंघचालक का भव्य स्वागत किया गया था। डॉ मोहन भागवत ने खासी समुदाय के पारंपरिक धार्मिक पूजा स्थल में दर्शन पूजन किया था। इसके पहले डॉ भागवत ने दिल्ली में सुयश कार्यक्रम के तहत विभिन्न सामाजिक कार्य में जुड़े संस्थाओं के कार्यक्रम में भाग लिया था। बैठक में मेघालय यात्रा और सुयश कार्यक्रम को लेकर कार्यकारी मंडल ने विस्तार से चर्चा की गई. इसके अतिरिक्त संघ से ज्वाइन आरएसएस ऑनलाइन माध्यम से जुड़ने के लिए बड़ी संख्या में आ रहे लोगों को संघ कार्य से जोड़ने पर भी विस्तार से चर्चा हुई. बैठक में संघ कार्यविस्तार पर भी चर्चा हुई। अगले दो वर्ष में सभी मंडलों और एक लाख स्थानों तक कार्य पहुंचाने का लक्ष्य रखा है. युवाओं को संघ के

प्रत्यक्ष कार्य से जोड़ा जाएगा.परिवार प्रबोधन एवं पर्यावरण संबंधी कार्यों पर भी विचार–विमर्श हुआ.इस वर्ष देशभर में लगे संघ शिक्षा वर्ग की भी समीक्षा की गई। संघ का मानना है कि जब तक समाज में ऊंच–नीच व छुआछूत का भाव रहेगा, तब तक संपूर्ण समाज का संगठन करना संभव नहीं है। समता के आधार और समरसता के व्यवहार से ही समाज में एकता स्थापित हो सकती है। इसलिए संघ ने अपने स्वयंसवकों से आह्वान किया है कि वह सामाजिक समरसता का संदेश घर–घर पहुंचाएं। प्रयागराज में चल रही अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक में समरसता के लिए कार्य पद्धति विकसित करने पर चर्चा हुई। छुआछूत हिन्दू समाज का कलंक है। इसलिए समाज से से छुआछूत को दूर करने के लिए संघ देशभर में काम करेगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अनुसूचित समाज के बंधुओं को उनकी योग्यता के अनुसार समान अवसर उपलब्ध कराने में सहायता करेगा। इसके अलावा अनुसूचित समाज के विद्यार्थियों, प्रवचन, नौकरी पेशा लोगों व महिलाओं से संपर्क कर हिंदुत्व का गौरव बोध कराने का काम संघ के स्वयंसेवक करेंगे। केवल सेवाकार्यों से समरसता नहीं आयेगी। हमें व्यवहार में व आचरण में समरसता का भाव लाना होगा। संघ कार्यकर्ताओं को समरसता युक्त जीवन जीना होगा। इसके अलावा वंचित समाज के शैक्षणिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विकास के लिए प्रयास करना होगा। अनुसूचित समाज के बंधुओं से संबंध, सम्मान व सहभाग के आधार पर देश विरोधी शक्तियों को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ लगाओ,पानी बचाओ और प्लास्टिक हटाओ के अभियान संचालित किए जाएंगे. इस अभियान में अन्य सामाजिक संगठनों का सहयोग लेने पर भी सहमति बनी। इसके अलावा पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के कार्य को तेज गति से बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि पेड़ों के संरक्षण के लिए पानी का दुरुपयोग रोकने के लिए और प्लास्टिक निर्मित वस्तुओं का कम से कम उपयोग करने के लिए समाज जागरण की आवश्यकता है। समय रहते अगर पर्यावरण संरक्षण के प्रति हम सचेत नहीं हुए तो समाज को इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की छह गतिविधियां हैं, उनमें एक पर्यावरण संरक्षण गतिविधि भी है। पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के माध्यम से संघ पर्यावरण मे सुधार के लिए काम करता है। इस गतिविधि का उद्देश्य समाज में जागरुकता निर्माण के माध्यम से पर्यावरण का संरक्षण करना है। दत्तात्रेय होसबाले ने कहा है कि

वर्ष 2024 के अंत तक देश के सभी मंडलों में शाखा पहुंचाने की योजना बनाई गई है। कई प्रांतों ने 99 तक काम पूरा कर लिया है। चित्तौड़, ब्रज एवं केरल प्रांत में मंडल स्तर तक शाखाएं शुरू हो गई हैं। पहले देश में 58 हजार स्थानों पर संघ की शाखाएं थीं। अब वर्तमान में 61,100 से अधिक स्थानों पर शाखाएं लग रही हैं। साप्ताहिक मिलन मंडली में भी 4000 की बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने कहा कि देश में जनसंख्या विस्फोट चिंताजनक है। इसलिए इस विषय पर समग्रता से एवं एकात्मता से विचार करके सब पर लागू होने वाली जनसंख्या नीति बनाई जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि देश के संसाधन सीमित हैं। इस पर देश में जन जागरण एवं प्रबंधन की आवश्यकता है। सरकार्यवाह होसबाले ने प्रयागराज के गौहनिया स्थित जयपुरिया स्कूल के वात्सल्य परिसर में संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की चार दिवसीय बैठक के अंतिम दिन बुधवार को प्रेस वार्ता में कहा कि मतांतरण होने से हिंदुओं की संख्या कम हो रही है। देश के कई हिस्सों में मतांतरण की साजिश चल रही है। कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ भी हो रही है। उन्होंने कहा कि जनसंख्या असंतुलन के कारण कई देशों में विभाजन की नौबत आई है। भारत का विभाजन भी जनसंख्या असंतुलन के कारण हुआ।

सरकार्यवाह ने बताया कि वर्ष 2025 में संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस निमित्त संघ कार्य को लेकर समय देने के लिए देशभर में तीन हजार युवक शताब्दी विस्तारक के नाते निकले हैं। अभी एक हजार शताब्दी विस्तारक और निकालेंगे।

भारत अर्थात् प्रकाशरत राष्ट्रीयता

हम भारतीय सनातनकाल से प्रकाशप्रिय हैं। भारत का भा प्रकाशवाची है और 'रत' का अर्थ संलग्नता है। भारत अर्थात प्रकाशरत राष्ट्रीयता। हम सब के चित्त में प्रकाश की अतृप्त अभिलाषा है। सम्पूर्ण अस्तित्व अपने मूल स्वरूप में प्रकाश रूपा है। अष्टावक्र ने जनक की सभा में कहा था, ''वह ज्योर्तिएकम् है।'' हंसोपनिषद् में अस्तित्व को ऊर्ध्व गतिशील पक्षी के रूपक में समझाया गया है। यह पक्षी हंस जैसा है। अग्नि और सोम इसके दो पंख हैं। समय और अग्नि भुजाए हैं।" मंत्र का अंतिम भाग अप्रतिम प्रकाशवाची है। बताते हैं, "एषो असो परमहंसौ भानुकोटि प्रतीकोशो येनेदं व्याप्तं – यह परम हंस करोड़ो सूर्यो के तेज जैसा प्रकाशमान है। इसका प्रकाश संपूर्ण अस्तित्व को व्याप्त करता है।" छोटा मोटा प्रकाश नहीं करोड़ों सूर्यों का प्रकाश। गीता में अर्जुन ने विराट रूप देखा। उसे भी "दिव्य सूर्य सहस्त्राणि' की अनुभूति हुई। यजुर्वेद में सोम से कहते हैं "आप ज्योतिरसि विश्वरूपं" है। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि उदय के पूर्व गहन अंधकार है। तब रात या दिन नहीं हैं। फिर प्रकाश है।''

हृदयनारायण दीक्षित

हम भारतीय सभा गोष्ठी में दिन में भी दीप जलाते हैं। स्वयं के बनाएं स्वयं के जलाए दीपों को नमस्कार करते हैं। सांझ आती है। विद्युत चालित प्रकाश उपकरण सक्रिय किए जाते हैं। हम उन्हें भी नमस्कार करते हैं। प्रकाश को नमस्कार हमारी सांस्कृतिक परंपरा है। प्रकृति अनेक रूपों में व्यक्त होती है। छान्दोग्य उपनिषद् के ऋषि ने बताया है कि "प्रकृति का समस्त सर्वोत्तम प्रकाश रूपा है।" मनुष्य का सर्वोत्तम प्रतिभा कहा जाता है। 'प्रतिभा' प्रकाश इकाई है। आभा और प्रतिभा भी प्रकाशवाची हैं। जहां जहां प्रकाश प्रकृति का सर्वोत्तम, वहां वहां प्रतिभा। हम धन्य हो जाते हैं। प्रकाश दीप्ति एक विशेष अनुभूति देती है। पूर्वजों ने प्रकाश दीप्ति अनुभूति को दिव्यता कहा। जो भारत में दिव्य है, अंग्रेजी में डिव। सूर्य प्रकाश में वही दिवस है। इसी की अन्तः अनुभूति दिव्यता या डिवाइनटी है। इसलिए जहां जहां दिव्यता वहां वहां देवता। हम भारतीय सनातन काल से बहुदेव उपासक हैं। हमने जहां–जहां प्रकाश पाया, वहां वहां देव पाया और माथा टेका। सूर्य प्रत्यक्ष देवता हैं। सूर्य नमनीय हैं। गायत्री मंत्र में सविता देव से बुद्धि की प्रार्थना है। सविता प्रकाशदाता सूर्य हैं। वे सविता देव सहस्त्र आयामी प्रकाश रूपा हैं। चन्द्र किरणें भी प्रकाश रूपा हैं। उनकी प्रभा दिव्य है। चन्द्र प्रकाश सूर्य प्रकाश का अनुषंगी है। सूर्य प्रकाश भी संभवतः किसी अन्य विराट प्रकाश के स्रोत से आता है।

प्रकाश का मूल स्रोत रहस्य है। कहां से आता है यह प्रकाश? इसका ईधन क्या है? सूर्य का ईधन अक्षय नहीं हो सकता। प्रकाश का यह स्रोत अजर और अमर जान पड़ता है। कठोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् व श्वेताश्वतर उपनिषद् में एक साथ आए एक रम्य मंत्र में उसी विराट प्रकाश का संकेत है "न तत्र सूर्यो भाति, न चन्द्रतारकम्। नेमा विद्युत भान्ति कुतोऽयमग्नि – उस विराट प्रकाश केन्द्र पर सूर्य नही चमकता और न ही चन्द्र तारागण। वहां विद्युत और अग्नि की दीप्ति भी नहीं है।" आगे

बताते हैं "तमे भान्तमनुभाति सर्वं, तस्य भासा सर्व इदं विभाति – उसी एक प्रकाश से ये सब प्रकाशित होते हैं।

हम सब अंधकार से व्यथित हैं। अंधकार अज्ञान वाची है। यह तमस गहरा है। रात्रि रम्य है। दिवस श्रम है, रात्रि विश्रम। दिवस बर्हिमुखी यात्रा है – स्वयं से दूर की ओर गतिशील। रात्रि दूर से स्वयं की ओर लौटना है। रात्रि आश्वस्ति है। रात्रि का संदेश है – "अब स्वयं को स्वयं के भीतर ले जाओ। अपने ही आत्म में करो विश्राम।" दिन भर कर्म। कर्मशीलता में थके, टूटे, क्लांत चित्त को विश्राम की प्रशान्त मुहूर्त देती है रात्रि। तमस् हमारे जीवन का भाग है। इसीलिए प्रति दिवस एक रात गहन तमस के हिस्से। प्रत्येक मास अमावस्या आती है। संभवतः यही बताने कि तमस् भी संसार का अंग है।

रात्रि में चन्द्रप्रकाश होता है। क्रमशः घटता बढ़ता हुआ। अमावस्या अंधकार से परिपूर्ण रात्रि है। जान पड़ता है कि अमावस ही चन्द्रमा की अवकाश रात्रि है। उस रात की आकाश गंगा दीप्ति वर्षाते हुए बहती हैं। सभी तारे और नक्षत्र अपनी पूरी ऊर्जा में प्रकाश देने का प्रयास करते हैं लेकिन अमावस का अंधकार नहीं भेद पाते। अमावस अपने प्रभाव क्षेत्र को तमस् से भर देती है वैसे ही पूर्णिमा प्रकाश से भरती है। तमस् और प्रकाश की अनुभूति प्रतिदिन भी उपस्थित होती है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक का काल प्रकाशपूर्ण रहता है और सूर्यास्त से सूर्योदय तक तमस् प्रभाव। तमस् और दिवस प्रतिपल भी घटते हैं जीवन में। आलस्य, प्रमाद, निष्क्रियता, निराशा और हताशा के क्षण तमस् काल हैं। उत्साह और उल्लास के क्षण प्रकाश प्रेरणा हैं।

"तमसो मा ज्योतिर्गमय" की स्तुति में प्रकाश हमारी प्रियतम आकांक्षा है। पूर्णिमा परिपूर्ण चन्द्र आभा है। शरद् पूर्णिमा की रात चन्द्र किरणें धरती तक उतरती हैं अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ। वैदिक ऋषि इसी तरह की सौ पूर्णिमा देखना चाहते थे। 'जीवेम शरदं शतम्' में 100 शरद देखने की प्यास है। शरद चन्द्र अपनी पूरी आभा में स्थावर जंगम पर अमृत रस बरसाता है। शरद पूनो के ठीक 15 दिन बाद की अमावस्या गहन अंधकार लाती है। पूर्वजों ने बहुत सोच समझकर इसी अमावस्या को झकाझक प्रकाश से भर दिया।

पूर्वजों ने अमावस को अपने कर्म से प्रकाश पर्व बनाया। शरद् पूर्णिमा की रात रस, गंध, मधु, ऋत और मधुआनंद तो 15 दिन बाद झमाझम दीपमालिका। जहां जहां तमस् वहां वहां प्रकाश–दीप। सूर्य और शरद चन्द्र का प्रकाश प्रकृति की अनुकम्पा है तो दीपोत्सव मनुष्य की कर्मशक्ति का रचा गढ़ा तेजोमय प्रकाश। प्रकाश ज्ञानदायी और समृद्धिदायी भी है। गजब के द्रष्टा थे हमारे पूर्वज। उन्होंने अमावस की रात्रि को अवनि अम्बर दीपोत्सव सजाये। भारत इस रात 'दिव्य दीपशिखा' हो जाता है। परिपूर्ण उत्सवधर्मा होता है। वातायन मधुमय होता है। आनंदी अचम्भा है यह। अमावस की रात प्रकाश पर्व की मुहूर्त घोषित करना। प्रत्यक्ष रूप में शरद् पूनों को ही प्रकाश पर्व जानना चाहिए था। लेकिन तब गहन तमस् का क्या होता? भारत के लोग इसी अमावस को प्रकाश से भरने की सांस्कृतिक कार्रवाई करते हैं।

भारत का मन अवधपुरी में रमता है। यह अयोध्या है। इसे पराजित नहीं किया जा सकता। मधु समृद्ध है यह नगरी। मर्यादा पुरुषोत्तम राजा राम यहीं जन्में। वे यहीं शिशु रूप उगे। तरूण हुए, अरूण हुए। आचार्यो से शिक्षा पाई। यहीं वेद पढ़े, विज्ञान जाना, ज्ञान पाया। तमाम स्मृतियां हैं अयोध्या के अन्तर्मन में। श्रीराम को राजसत्ता मिलने जा रही थी कि नियति ने वनवास दिया। वे चित्रकूट रमे। अनेक काण्ड हुए। पहले बाल काण्ड। अयोध्या की घटनाएं। किष्किंधा और सुंदर। फिर पौरूष पराक्रम की अभिव्यक्ति वाला लंका काण्ड। श्रीराम की लंका विजय भी सांस्कृतिक धरोहर है। वे युद्ध जीते। चाहते तो लक्ष्मण को लंका का राज्य सौंप सकते थे लेकिन उन्होंने रावण के परिजन विभीषण को ही राज सौंपा। वापस आ गए अयोध्या। सो क्यों? उन्होंने अंगद को यह रहस्य बताया। तुलसी के शब्दों में "सुनु कपीस अंगद लंकेशा। पावन पुरी रूचिर यह देशा" – यह पुरी पवित्र है और यह देश सुंदर। तब अपने राम को पाकर अयोध्या ज्योतिर्मय हो गई। सब तरफ प्रकाश दीप। आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व उ0प्र0 के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दीप पर्व की ज्योतिर्मयता में हैं। भारत का मन पुलकित है। लाखों दीप। मनभावन ज्योतिर्मियता। रामराज्य के आदर्शो की निष्ठा।

जनसंख्या सन्तुलन

जनसँख्या की द्रष्टि से भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है. अनुमान है कि अगले कुछ दशक में भारत की जनसंख्या चीन से भी अधिक हो जाएगी जबकि क्षेत्रफ़ल के हिसाब से भारत बहुत पीछे रहेगा। प्राकृतिक संसाधनों की भी एक सीमा होती है. ऐसे में भारत को जनसँख्या नियन्त्रण और संतुलन की नीति बनानी होगी.देश और भावी पीढ़ी का भविष्य इससे जुड़ा हुआ है. जनसंख्या नियंत्रण का संबन्ध विकास व संसाधनों से जुड़ा है। जनसंख्या व संसाधनों के बीच एक संतुलन होना चाहिए। अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि से संसाधनों का अभाव होने लगता है। सबसे पहले इसका प्रतिकूल प्रभाव गरीबों पर पड़ता है। जिस वस्तु का अभाव होता है, उसकी कीमत बढ़ जाती है। धनी वर्ग उनको खरीद सकता है। जबकि गरीबों को मुसीबत का सामना करना पड़ता है।

जनसँख्या में संतुलन की जरूरत होती है। हमने जनसंख्या असंतुलन के दुष्प्रभाव पहले भुगते हैं। जनसंख्या में पंथ और संप्रदायों के असंतुलन के कारण देश टूट गया। घुसपैठ के जरिए भी असंतुलन जैसी चीजें होती हैं। इस संतुलन पर ध्यान देना होगा.इसलिए जनसंख्या नियंत्रण पर एक व्यापक नीति तैयार की जानी चाहिए और उसे सख्ती से लागू किया जाना चाहिए। इससे किसी को भी छूट नहीं मिलनी चाहिए। जब जनसंख्या बढ़ती है तो बोझ बढ़ता है, लेकिन अगर जनसंख्या को सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो वही जनसंख्या ताकत बन जाती है। दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाले देश चीन की सरकार ने अपने देश में परिवार नियोजन को कड़ाई से लागू किया था। आजकल चीन में बूढ़े लोग ज्यादा और युवा कम हैं। अब उसी चीनी सरकार को दो बच्चों के लिए आह्वान करना पड़ रहा है। यदि जनसंख्या घटती है तो समाज और कई भाषाओं के विलुप्त होने का डर भी रहता है। किसी भी आबादी में जाति, धर्म और पंथ के संतुलन की जरूरत होती है। भारत में जनसंख्या नियंत्रण का विषय दशकों पुराना है। पहले भी ये विषय उठता रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस विषय को उठाया था। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार इस संबन्ध में एक मसौदा लेकर आई थी। संविधान की समवर्ती सूची में जनसंख्या नियंत्रण एवं परिवार नियोजन का विषय शामिल है। ऐसे में केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा इससे संबंधित अधिनियम बनाने में कुछ भी अनुचित नहीं है। करीब दो दशक पहले भी सविधान समीक्षा आयोग ने केंद्र सरकार को इससे संबंधित निर्देश देते हुए कहा था कि वह जनसंख्या नियंत्रण संबंधी कानून बनाए। जनसंख्या की अनियंत्रित वृद्धि विकास में बाधक भी साबित हो सकती है। इससे संसाधनों पर दबाव बढ़ता है। लोगों के जीवन स्तर में खराबी आती है। भारत के लिए यह स्थिति विशेष चिंता का विषय है। भारत के पास विश्व का मात्र दो प्रतिशत भूभाग है जबकि यहां पर विश्व की बीस प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। भारत की जनसंख्या वर्तमान में एक सौ पैंतीस करोड़ से अधिक है। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार अगले कुछ वर्षों में जनसंख्या के मामले चीन भी भारत से पीछे हो जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण के लिए विधि आयोग के परामर्श से जो कदम उठाए,वह सर्वथा उचित हैं। जिस गति से जनसंख्या बढ़ रही है, उसके अनुरूप संसाधनों की व्यवस्था संभव ही नहीं है। विपक्ष के राजनीतिक दल चाहे जो दावा करें, वह संसाधनों का सृजन नहीं कर सकते। जो लोग जनसंख्या नियंत्रण का विरोध करते है, उन्हें संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता के संबन्ध में भी विचार व्यक्त करना चाहिए। जनसंख्या का स्थिरीकरण होना अपरिहार्य है। 1951 से 1991 के बीच उत्तर प्रदेश की आबादी 120 प्रतिशत बढ़ी थी। आगे भी उत्तर प्रदेश की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। तब प्रदेश की आबादी तेरह करोड़ थी। अब यह बढ़कर पच्चीस करोड़ से अधिक हो गई है। यह स्पष्ट है कि बढ़ती जनसंख्या से विकास व संसाधनों से संबंधित अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। हालांकि अभी समाज में दो वर्ग हैं। एक वर्ग ने स्वेच्छा से जनसंख्या नियंत्रण को स्वीकार किया है। यह उनका समाज व देश के प्रति सहयोग भी है। दूसरे वर्ग ने जनसंख्या नियंत्रण को स्वीकार नहीं किया है। इस कारण संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है। सहयोग करने वालों को प्रोत्साहन देना चाहिए जबकि ऐसा ना करने वालों को उन्हीं सीमित संसाधनों से सुविधा प्रदान करते रहने का औचित्य नहीं है। जनसंख्या नियंत्रण परिवार नियोजन से अलग है। सरकारी संसाधन और सुविधाएं उन लोगों को उपलब्ध हों, जो जनसंख्या नियंत्रण में सहयोग कर रहे हैं। योगी सरकार की नई नीति में जनसंख्या नियंत्रण में सहयोग करने वालों को प्रोत्साहन देने का प्रावधान है। योगी आदित्यनाथ ने इसका मसौदा जारी करते हुए कहा कि बढ़ती जनसंख्या समाज में व्याप्त असमानता समेत प्रमुख समस्याओं का मूल है। समुन्नत समाज की स्थापना के लिए जनसंख्या नियंत्रण प्राथमिक शर्त है। नई नीति में जनसंख्या स्थिरीकरण के लिए जागरूकता प्रयासों के क्रम में स्कूलों में हेल्थ क्लब बनाये जाने का अभिनव प्रस्ताव है। डिजिटल हेल्थ मिशन की भावनाओं के अनुरूप नवजातों, किशोरों और वृद्धजनों की डिजिटल ट्रैकिंग की व्यवस्था की भी बात है। सभी समुदायों में जन सांख्यकीय संतुलन बनाये रखने, उन्नत स्वास्थ्य सुविधाओं की सहज उपलब्धता, समुचित पोषण पर भी जोर दिया गया है। इसे राज्य विधि आयोग ने तैयार किया है। इसमें जिनके दो ही बच्चे हैं, उन्हें प्रोत्साहन देने का प्रस्ताव है। यह नीति कानून बनकर लागू हुई तो एक साल के भीतर सभी सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों और स्थानीय निकायों में चयनित जनप्रतिनिधियों को शपथपत्र देना होगा कि वह इस नीति का उल्लंघन नहीं करेंगे। उल्लंघन पर निर्वाचन रद्द होगा। योगी आदित्यनाथ ने कहा था कि समाज के विभिन्न वर्गों को ध्यान में रखकर प्रदेश सरकार इस जनसंख्या नीति को लागू करने का काम कर रही है। जनसंख्या नीति का संबंध केवल जनसंख्या स्थिरीकरण के साथ ही नहीं है बल्कि हर एक नागरिक के जीवन में खुशहाली और समृद्धि का रास्ता उसके द्वार तक पहुंचाना भी है।

देश में सब पर लागू होने वाली जनसंख्या नीति बननी चाहिए: दत्तात्रेय होसबाले

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यों के जनजातीय समुदाय के लोगों में भी स्वाभिमान जागरण के कारण ''मैं भी हिन्दू हूँ'' का बोध विकसित हुआ है।

सरकार्यवाह जी आज प्रयागराज के गौहनिया स्थित जयपुरिया स्कूल के वात्सल्य परिसर में आयोजित प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि स्वाभिमान जागरण के कारण ही पूर्वोत्तर राज्यों के जनजातीय समुदाय के लोग अब संघ से भी जुड़ना चाहते हैं। उन्होंने बताया कि मेघालय और त्रिपुरा राज्य के जनजाति समुदाय के लोग संघ के सरसंघचालक जी को भी इस बोध के साथ आमंत्रित करने लगे हैं।

आरएसएस के सरकार्यवाह बोले, साल भर में बढ़ी 6600 संघ की शाखाएं

प्रयागराज में आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की चार दिवसीय अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक के अंतिम दिन दत्तात्रेय होसबाले ने पत्रकारों को बताया कि संघ अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष में बहुत से आयामों में कार्य को गति प्रदान कर रहा है। कोरोना की विभीषिका के कठिन समय में भी संघ ने अपने कार्यों के आयामों में अभूतपूर्व प्रगति की है।

जनसंख्या असंतुलन पर चिंता जताई

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह जी ने कहा कि देश में जनसंख्या विस्फोट चिंताजनक है। इसलिए इस विषय पर समग्रता से व एकात्मता से विचार करके सब पर लागू होने वाली जनसंख्या नीति बननी चाहिए। मतांतरण होने से हिन्दुओं की संख्या कम हो रही है। देश के कई हिस्सों में मतांतरण की साजिश चल रही है। कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ भी हो रही है। सरकार्यवाह ने कहा कि जनसंख्या असंतुलन के कारण कई देशों में विभाजन की नौबत आई है। भारत का विभाजन भी जनसंख्या असंतुलन के कारण हो चुका है।

2024 तक सभी मंडल शाखा युक्त होंगे

सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने बताया कि वर्ष 2024 के अंत तक हिंदुस्तान के सभी मंडलों में शाखा पहुंचाने की योजना बनाई गई है। कुछ प्रांतों में यह कार्य चुनिंदा मंडलों में 99 प्रतिशत तक पूरा कर लिया है। चित्तौड़, ब्रज व केरल प्रांत में मंडल स्तर तक शाखाएं खुल गई है। पहले देश में 54382 संघ की शाखाएं थीं, अब वर्तमान में 61045 शाखाएँ लग रही हैं। साप्ताहिक मिलन में भी 4000 और मासिक संघ मंडली में विगत एक वर्ष में 1800 की बढ़ोतरी हुई है।

देश में तीन हजार निकले शताब्दी विस्तारक

सरकार्यवाह ने बताया कि वर्ष 2025 में संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस निमित्त संघ कार्य के लिए समय देने के लिए देशभर में तीन हजार युवक शताब्दी विस्तारक के नाते निकले हैं। अभी एक हजार शताब्दी विस्तारक और निकलने हैं।

कार्यकारी मंडल की बैठक में सामाजिक विषयों पर भी हुई चर्चा

दत्तात्रेय होसबाले जी ने बताया कि संगम नगरी में आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक में जनसंख्या असंतुलन, महिला सहभागिता, मतांतरण और आर्थिक स्वावलंबन जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई तथा संघ कार्यों को विस्तार प्रदान करने की विस्तृत कार्ययोजना के संबंध में विचार मंथन हुआ।

जनसंख्या असंतुलन से संबंधित एक सवाल के जवाब में कहा कि विगत 40—50 वर्षों से जनसंख्या नियंत्रण पर जोर देने के कारण प्रत्येक परिवार की औसत जनसंख्या 3.4 से कम होकर 1.9 हो गई है। इसके चलते भारत में एक समय ऐसा आएगा, जब युवाओं की जनसंख्या कम हो जाएगी और वृद्ध लोगों की आबादी अधिक होगी, यह चिंताजनक है।

देश को युवा देश बनाए रखने के लिए जनसंख्या को संतुलित रखने पर ज़ोर दिया। वहीं, मतांतरण और बाहरी घुसपैठ जैसे दुष्चक्र के कारण होने वाली जनसंख्या असंतुलन पर चिंता भी व्यक्त की।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मण्डल की बैठक जिला मुख्यालय से लगभग 25 किलोमीटर दूर यमुनापार में गौहनिया स्थित वात्सल्य विद्यालय परिसर में आयोजित हुई। पूज्य सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत, माननीय सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने रविवार को भारत माता के चित्र पर पुष्पार्चन कर बैठक का शुभारम्भ किया था। बुधवार यानि 19 अक्तूबर को बैठक का समापन हुआ।

वास्तविक सुख

अपने सुख की, उन्नति और हित की कामना प्रत्येक व्यक्ति में रहती है। किंतु हमारी उन्नति की दिशा क्या है, हित किस में है, जिसे हम सुख समझते हैं, वह वास्तविक सुख है या नहीं, यह बहुधा लोगों को पता नहीं रहता। इसके संबंध में अनेक विवाद हैं, और उनसे अनेक बार मति भ्रम भी हो जाता है।

उन्नति क्या है?

बहुत लोग केवल परिवर्तन को ही उन्नति मानते हैं। आजकल इसे क्रांति का नाम भी दिया जाता है। हर व्यक्ति अपने आपको क्रांतिकारी कहलाना चाहता है, लेकिन वह क्रांति का अर्थ ठीक से नहीं जानता। यदि परिवर्तन ही क्रांति या उन्नति है तो उलटी दिशा में जाने पर भी परिवर्तन तो होता ही है। इस परिवर्तन को उन्नति कहना उचित नहीं होगा।

मान लो, हमें हिमालय की ओर जाना है तो उत्तर की ओर जाना प्रगति होगी और दक्षिण की ओर जाना अधोगति। इसलिए केवल परिवर्तन उन्नति और क्रांति नहीं होती। उन्नति का संबंध तो दिशा से होता है। अभीष्ट दिशा की ओर और ध्येय के नजदीक ले जानेवाला परिवर्तन ही क्रांति या उन्नति कहलाएगा।

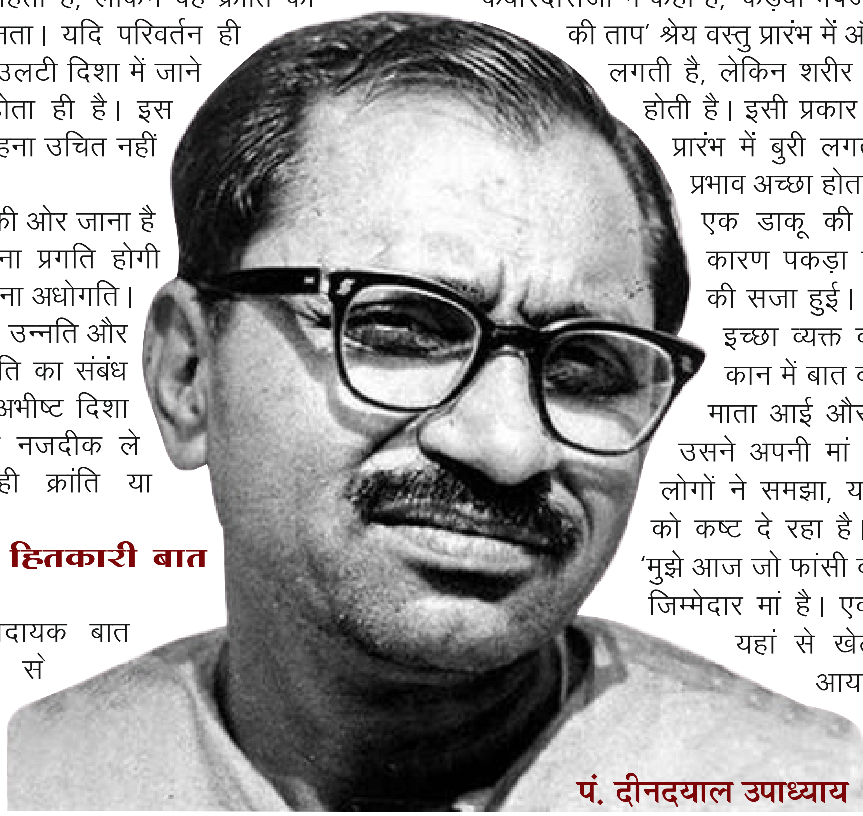

पं. दीनदयाल उपाध्याय

लाभदायक तथा हितकारी बात कौन सी है?

कई बार प्रत्यक्ष लाभदायक बात वास्तविक दृष्टि से लाभदायक नहीं होती, जैसे कुछ पैसे मिलना लाभ की बात होती है। मुझे सौ रुपए मिले, इसमें लाभ दिखाई देता है, लेकिन यदि वे रुपए चोरी के अथवा जेबकतरे हुए हैं और मुझे मिल गए हैं, तो वो मुझे लाभ के बजाय नुकसान पहुंचानेवाले हो जाएंगे। उनके कारण चोरी का जुर्म, पुलिस का दुर्व्यवहार और प्रतिष्ठा को ठेस लगेगी, इसलिए कुछ मिलना मात्र लाभदायक और हितकारी नहीं होता। लाभ और हित का विचार तो उसके परिणाम के आधार पर होता है। शरीर, मन, प्रतिष्ठाकृ सभी पर परिणाम का विचार करने पर जो लाभदायक या हितकर होगा, वही लाभदायक या हितकर माना जाएगा।

सुख की कल्पना

सुख के लिए भी इसी प्रकार विचार करना उचित रहेगा। कई बार एक समय पर सुखकर लगनेवाली बात दूसरे समय पर दुःखकर सिद्ध हो जाती है। बीमार को रसना का सुख प्रारंभ में अच्छा लगता है, वह आचार खाने में सुख का अनुभव करता है, लेकिन उसका परिणाम दुःखकारक होता है। सिनेमा देखने में अच्छा लगता है, लेकिन निरंतर देखने से हमारी आंखों के लिए ही हानिकारक हो जाता है। इसके लिए हमारे यहां प्रेय और श्रेय दो प्रकार के सुख की कल्पना की गई है। प्रेय वस्तु पहले सुखकारी लगती है और बाद में दुःखदायी हो जाती है। कबीरदासजी ने कहा है, 'कड़वी भैषज बिन पिए मिटे न तन की ताप' श्रेय वस्तु प्रारंभ में औषधि के समान कड़वी लगती है, लेकिन शरीर का कष्ट मिटानेवाली होती है। इसी प्रकार अधिकारी की ताड़ना प्रारंभ में बुरी लगती है, लेकिन उसका प्रभाव अच्छा होता है।

एक डाकू की कथा है, डकैती के कारण पकड़ा गया और उसे फांसी की सजा हुई। उसने अपनी आख़िरी इच्छा व्यक्त की। 'मैं अपनी मां के कान में बात करना चाहता हूं।' जब माता आई और उसके पास गई तो उसने अपनी मां के कान काट लिये। लोगों ने समझा, यह मरते–मरते भी मां को कष्ट दे रहा है। लेकिन उसने कहा, 'मुझे आज जो फांसी की सजा मिली उसकी जिम्मेदार मां है। एक दिन मैं पड़ोसी के यहां से खेलते–खेलते पंखा ले आया। माता आनंदित हुई और पंखे को रख लिया। दूसरे दिन उत्साह से मैं पड़ोसी की अन्य चीजें चुराकर लाने लगा, माता उन्हें भी रखने लग गई। इस प्रकार मेरी चोरी–डकैती आदि की आदत पड़ गई और मुझे आज का दिन देखना पड़ा है।' इस प्रकार प्रारंभ का आनंद अंत में जाकर दुःखदायी हो जाता है। इसलिए वास्तविक सुख क्या है, इस पर विचार करना पड़ेगा। गहना पहनना और भारी गहने पहनना गौरव तथा गर्व की बात मानी जाती है। लेकिन वो यदि कान तोड़नेवाली हो तो उसका क्या उपयोग है? 'वा सोने को जारिए जासे टूटे कान' आजकल टाई लगाने की प्रथा बहुत है, शौक से, आनंद से लगाई जाती है, लेकिन गरमी में गरमी बढ़ाने की तकलीफ़ मनुष्यों को मन ही मन बरदाश्त करनी पड़ती है। इस प्रकार वास्तव में तकलीफ़ देनेवाली टाई दिमाग

की खराबी के कारण सुखकारी प्रतीत होती है।

सुख–दुःख, हित–अहित, उन्नति–अधोगति क्या है, इसका विचार करना होगा। मेरे लिए सुखकारी है, 'मैं' कौन है? उत्तर कठिन है। यह शरीर ही मैं नहीं, शरीर ही व्यक्ति नहीं होता। बहुत बार लोग मानते हैं कि शरीर जाने पर भी उसका सामर्थ्य बना रहता है। राम का कल्याण करने का सामर्थ्य आज भी बना हुआ है। रावण वैसे मर गया होगा, लेकिन रावण अपने कार्यों के लिए जिंदा है। इसलिए कोई रावण या शूर्पणखा नाम नहीं रखना चाहता। महान् पुरुषों के जीवन समाप्त हो जाते हैं। उनके कार्य हमें प्रेरित करते रहते हैं।

इसलिए यह शरीर को ही सब कुछ मान लेना उचित नहीं है। ताक़तवर शरीर रखने के उपरांत भी एक पागल सुखी, प्रगतिशील या उन्नत नहीं कहला सकता। जो सुख शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा सभी को सुखी बना सके, वही सच्चा सुख है। शेर के पिंजरे के सम्मुख बकरी को बांध दिया जाए और उसे पौष्टिक भोजन देते रहने पर भी वह दुर्बल होती जाती है। कारण उसे शेर अथवा मौत का भय मन में बना रहता है। इस प्रकार पौष्टिक भोजन के साथ मन की स्थिति भी सुख में सहयोगी होती है। मन के सुख में ही शरीर भी सुखी रहेगा।

देवता और असुर में यही अंतर है कि देवता के विचार उच्च होते हैं, शरीर चाहे उतना शक्तिशाली न हो। असुर शक्तिशाली होता है, लेकिन उसमें मानसिक विकार बहुत होता है। रावण के कई सिरों में इसलिए एक गधे के सिर को खर दिमाग की कल्पना दी गई है। वही राक्षसी वृत्ति है।

सज्जन और दुर्जन में यही अंतर होता है कि धन मिलने पर सज्जन दान देता है, दुर्जन घमंड करता है। शक्ति मिलने पर सज्जन रक्षण करता है, दुर्जन दादागिरी, गुंडागिरी करता है। विद्या मिलने पर सज्जन ज्ञान प्राप्त करता है, दुर्जन कुतर्क करता है और प्रसार करता है, यही राक्षस और देवता में भी अंतर है। समाज के कुछ लोग रोटी को ही सब कुछ मानने लगे हैं, पर अकेली रोटी ही सब कुछ नहीं होती। रोटी के लिए मानव प्रयत्न 5 से 8 प्रतिशत तक ही करता है। अन्य प्रयत्न मानव के महत्त्वपूर्ण कार्य माने जाते हैं।

रोटी के साथ–साथ मक्खन, चटनी, रोचक पदार्थ, शराब भी मनुष्य आवश्यक मानने लगता है। इसी प्रकार कपड़े की सामान्य आवश्यकता बढ़िया कपड़े, अधिक कपड़े, फैशन के कपड़े के रूप में बढ़ती रहती है। मनुष्य की इच्छाएं हनुमानजी की पूंछ के समान बढ़ती हैं। इच्छाओं को आप जितनी तृप्त करते चले जाओ, उतनी ही ये बढ़ती हैं।

रोटी के साथ गाली देने पर अनादर करने पर व्यक्ति रोटी को भी द्वितीय महत्त्व दे देता है। निमंत्रण से ही भोजन पर जाने की प्रथा है, इसलिए भगवान् कृष्ण ने इसी भावना से दुर्योधन का मेवा त्यागा और विदुर के घर पर केले के छिलके भी आनंदपूर्वक खा लिए। इसलिए यह कहना कि मनुष्य केवल रोटी के लिए ही जीता है, अधूरी कल्पना है। मान लीजिए, आपको यहां से जयपुर जाना है तो सबसे पहला काम आप स्टेशन पर जाकर टिकट खरीदने का करेंगे, लेकिन आप कहेंगे, मुझे जयपुर जाना है, टिकट खरीदना है नहीं कहेंगे। इसी प्रकार रोटी पहला कार्य हो सकता है, लेकिन जीवन का उद्देश्य नहीं मनुष्य खाने के लिए नहीं जीता, मनुष्य जीवन तो भोजन के आगे है। रोटी भी मनुष्य के अनुरूप होना आवश्यक है पेट कुआं नहीं है कि कुछ भी इसमें भर दिया। जीवन के उद्देश्य के अनुरूप देशकाल परिस्थिति के अनुसार रोटी होनी चाहिए। जिस प्रकार उज्जैन जाने के लिए खंडवा का टिकट काम नहीं दे सकता। उसी प्रकार पहलवान की रोटी, योगी की रोटी और गृहस्थी की रोटी में अंतर होता है। जीवन के उद्देश्य से रोटी तय होती है और उद्देश्य को हटाकर केवल रोटी का नारा लगाना ग़लत होगा।

सुख इंद्रियों पर ही आधारित नहीं होता; शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा– सभी को सुख हो, वही वास्तविक सुख होता है। पश्चिम की दृष्टि में सुख को एकांगी दृष्टिकोण से देखा गया है। भारत में सुख को समग्र दृष्टि से देखा जाता है।

व्यक्ति तथा समाज

व्यक्ति का सुख समाज के साथ है, व्यक्ति और समाज अलग–अलग चीजें नहीं हैं। व्यक्ति समाज का ही एक अंग है। व्यक्तियों को हटाकर समाज का कोई विचार नहीं होता समाज यदि क्रियाशील होता है तो व्यक्ति के द्वारा ही समाज का सुख–दुःख व्यक्तियों के द्वारा व्यक्त होता है और समाज ही व्यक्ति को विभिन्न सामाजिक कार्यों की प्रेरणा देता है।

महात्मा गांधी, परम पूजनीय डॉक्टर साहब, सुभाष चंद्र बोस, भगतसिंह, बटुकेश्वर दत्त प्रभृति हमारे नेता सामाजिक प्रेरणा के कारण ही अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य कर सके। व्यक्ति समाज पर निर्भर रहता है। मेरा नाम, मेरा शरीर, मेरी आदतें, व्यवहार सब समाज द्वारा दिए हुए हैं। समाज द्वारा ही मनुष्य खड़ा होता है, चलना–फिरना, खाना–पीना, बोलना आदि सीखता है।

रामू भेड़िया बालक समाज से दूर हो गया। इस कारण उसका खाना, रहना, चलना, बोलना–सभी भेड़ियों के समान हो गया। यूरोपीय लोग पालथी मारकर नहीं बैठ सकते। अफ्रीका में औरतें पैर फैलाकर बैठती हैं। ऐसा कहा जाता है, उनके पांव नहीं मुड़ते, इन सभी आदतों में समाज का प्रभाव मुख्य है।

हमारी भाषा भी समाज द्वारा दी हुई है। भाषा विचार प्रकट करने का ही माध्यम नहीं है, वरन् यह विचार करने का भी साधन है। जैसा अभी किया जा रहा है। शिक्षा भी व्यक्ति को समाज द्वारा ही मिलती है। अच्छी–बुरी की कल्पना समाज द्वारा ही होती है। अतः समाज से अलग होकर सोचना गलत है। सुख, उन्नति और हित में व्यक्ति और समाज दोनों दृष्टियों से सोचना जरूरी है। यही पूर्णता का विचार है। मैं, शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा है। मैं और हम एक हैं। मैं हिंदू हैं, मैं भारतवासी है, मैं मानव हैकृ यही पूर्णता का विचार है। मानवता, हिंदुत्व आदि भावनाएं निकाल देने पर 'मैं' नहीं बचेगा। इसलिए 'मैं' में समाज का भी समावेश है। इस प्रकार कुल मिलाकर विचार करने का हमारा तरीक़ा है। हम लोग भी कुल मिलाकर विचार करें। यही हमारे भारतवर्ष की दृष्टि है।

–संघ शिक्षा वर्ग, बौद्धिक वर्गः मई 26, 1967

साहनी जी हर किसी को अपना बना लेते थे: नरेन्द्र मोदी

श्री केदारनाथ साहनी का जन्म 24 अक्टूबर, 1926 को रावलपिंडी (अब पाकिस्तान) के थट्टा गांव में हुआ था। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे। उन्होंने भारतीय जनसंघ एवं भाजपा के अनेक महत्वपूर्ण दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। साहनी जी ने सिक्किम और गोवा के राज्यपाल पद को भी सुशोभित किया। 3 अक्टूबर, 2012 को साहनी जी का देहावसान हो गया। हम उनकी स्मृति में डॉ० मुकर्जी स्मृति न्यास द्वारा प्रकाशित 'अपने साहनी जी' पुस्तक का प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लिखा गया आमुख यहां प्रकाशित कर रहे हैं–

स्वर्गीय श्री केदारनाथ साहनी से सदैव ही मेरे अत्यंत निकट संबंध रहे। मुझे सदा–सर्वदा ही उनका सहयोग, स्नेह और आशीष मिलता रहा। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व, सौम्य स्वभाव और मृदुभाषी व्यवहार ऐसा था जो किसी अपरिचित व्यक्ति को भी अपना बना लेता था।

संघ परिवार के लगभग प्रत्येक कार्यक्रम में भारतीय वेशभूषा में, मितभाषी और मृदुभाषी मंद मुस्कान बिखेरता और ठीक समय पर पहुंचने वाला उनका सौम्य चेहरा मुझे सदा प्रेरणा देता रहा है। वे सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन के विरले आदर्श पुरुष थे।

श्री साहनी जी के व्यक्तित्व में एक राष्ट्रवादी चिंतन था। राष्ट्रप्रेम और समरसता की ऊर्जा को दूसरों तक पहुंचाना उनका एकमात्र लक्ष्य था। उनका जीवन इतनी विविधताओं से भरा हुआ था कि उनके व्यक्तित्व के जादू से प्रभावित हुए बिना कोई रह नहीं पाता था।

1996 के दौरान वे दिल्ली भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष थे और मैं पार्टी का राष्ट्रीय महासचिव था। तब कई बार साहनी जी से मिलने का, बातचीत करने का और उनके साथ चर्चा में शामिल होने का मौका मिला।

महासचिव के तौर पर दिल्ली आने से पहले जब मुझ पर गुजरात में पार्टी के प्रचार की जिम्मेदारी थी, तब भी हमें साहनी जी के सामाजिक और सार्वजनिक जीवन से जुड़ी खबरें मिलती रहती थीं। राजनीति में इतने ऊंचे आदर्श स्थापित करने वाली शख्सियतें कम ही होती हैं। साहनी जी, अत्यंत कुशल संगठनकर्ता थे।

साहनी जी के लिए अनुशासन सदैव सर्वोपरि था। 1976 में दिल्ली नगर निगम चुनाव के वक्त स्टैंडिंग कमेटी के चेयरमैन के तौर पर उन्होंने इस बात की परवाह किए बिना कि पार्टी अल्पमत में है, पार्टी लाइन से बाहर जाने वाले पार्षदों को निलंबित कर दिया था। वे नियमों के साथ कभी कोई समझौता नहीं करते थे।

अलग–अलग इकाइयों में उन्हें जो भी दायित्व मिला, उन सभी जगहों पर उन्होंने बहुत कड़े अनुशासन का परिचय दिया। वे अलोकप्रिय होने का जोखिम उठाकर भी कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते थे।

समय की पाबंदी को लेकर भी साहनी जी हमेशा गंभीर रहे। निमंत्रण पत्र पर कार्यक्रम का जो वक्त लिखा होता, वे उसी समय पहुंचते थे। कई बार तैयारी पूरी ना होने की वजह से आयोजकों को शर्मिंदगी भी उठानी पड़ती थी और कई बार खुद साहनी जी को भी लंबा इंतजार करना पड़ता था, क्योंकि बाकी लोग भी देर से ही आते थे।

साहनी जी, दिल्ली महानगर परिषद में मुख्य कार्यकारी पार्षद के पद रहे, उन्होंने दिल्ली बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष का पद भी संभाला। दिल्ली नगर निगम का पूर्व सदस्य होने के बावजूद उन्होंने सरकार से कभी पेंशन नहीं ली। वे कहते थे कि उन्होंने जो कुछ किया, वह समाज सेवा के अपने दायित्व के लिए किया, उसकी पेंशन क्या लेना? आज के दौर में इस तरह की बात करने वाले कम ही लोग मिलेंगे।

विचारधारा और अनुशासन से किसी भी तरह का समझौता किए बगैर, वे अपने काम से कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देते थे, उनका मार्गदर्शन करते थे। कार्यकर्ताओं को उनके आचरण और मर्यादा के संदर्भ में स्पष्ट और दो टूक बात करने में भी वे झिझकते नहीं थे।

एक बार साहनी जी को बहुत इमरजेंसी में पार्टी की कार का निजी इस्तेमाल करना पड़ा था। जब काम खत्म हुआ तो, उन्होंने पार्टी के अकाउंट में कार का किराया जमा कराया। वे कहते थे कि सार्वजनिक धन की एक–एक पाई के लिए नेता जवाबदेह हैं और इसलिए इस धन का निजी कार्य के लिए उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

साहनी जी का बाह्य व्यक्तित्व कठोर था, लेकिन मन बहुत कोमल और संवेदनशील था। इंसानियत और ईमानदारी की जो मिसालें स्वर्गीय साहनी जी समाज को देकर गए हैं, वैसी अब कम ही मिलती हैं।

90 के दशक में जिस वक्त आतंकवाद की वजह से हजारों की तादाद में लोग कश्मीर से दिल्ली आ रहे थे, तब साहनी जी ने उनकी मदद के लिए दिन–रात एक कर दिया। उनके रहने–खाने और दवाइयों तक का इंतजाम किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनुशासित सिपाही की तरह वे किसी भी कार्य को आगे बढ़कर, खुद करने में संकोच नहीं करते थे।

पार्टी के लिए धन संग्रह करने की उनकी क्षमता भी प्रशंसा करने योग्य थी। अपने संबंधों का उपयोग वे पार्टी के लिए धन इकट्ठा करने के लिए तो करते ही थे, लेकिन साथ ही इन संबंधों के जरिए वे गरीबों की भी उतनी मदद करते रहते थे। इसलिए जब गरीब और बेसहारा परिवारों को आर्थिक सहायता देने के लिए 'चौपाल' नाम की संस्था शुरू की गई, तो साहनी जी ने उसके संरक्षक होने का दायित्व सहर्ष संभाला।

कार्यकर्ताओं की समस्या, उनकी वेदना और संकट की घड़ी में केदार नाथ साहनी जी खुद जिम्मेदारी लेकर मदद के लिए आगे आते थे।

2009 की बात होगी जब पार्टी की एक महिला कार्यकर्ता के लिए वे भगवान बनकर आए। उस महिला के बेटे को कैंसर था और इलाज के लिए काफी पैसों की आवश्यकता थी। साहनी जी ने बिना उस महिला को बताए ही इलाज की सारी रकम का इंतजाम कर दिया।

इसी तरह एक बार एक गरीब कार्यकर्ता की किडनी फेल हो जाने पर साहनी जी ने पार्टी के एक पदाधिकारी को अलग से जिम्मेदारी सौंप दी थी कि उस कार्यकर्ता को इलाज और पैसे की कमी ना आए। जब तक वो कार्यकर्ता जीवित रहा, साहनी जी खुद भी उसकी आर्थिक मदद करते रहे और दूसरों से भी करवाते रहे।

साहनी जी के व्यक्तित्व की ये विशेषताएं संघ प्रचारक के तौर पर उनके काम में भी हमेशा दिखाई दीं। मुश्किल हालात का वे डटकर मुकाबला करते थे। 1947 में बंटवारे से पहले उन्हें संघ प्रचारक के तौर पर जम्मू–कश्मीर भेजा गया था। उन्होंने कश्मीर पर पाकिस्तान की कबाइली फौज के आक्रमण को झेला और कश्मीर के भारत में विलय के साक्षी भी बने। इस दौरान साहनी जी ने बहुत से लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाकर उनकी जान भी बचाई।

जब देश में आपातकाल लगा तो उन्होंने वेश बदलकर सरकार को चकमा दिया और विदेश चले गए और वहीं से तत्कालीन सरकार की नीतियों के खिलाफ जमकर प्रचार किया।

विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं से भी केदारनाथ साहनी जी के बड़े आत्मीय संबंध थे। इनके अलावा समाज के दूसरे तबकों जैसे डॉक्टर इंजीनियर, वकील, शिक्षाविद् और अन्य प्रभावी लोगों से उनका संवाद निरंतर चलता रहता था। समाज में सभी के साथ संपर्क रखने में वे बहुत कुशल थे और साथ ही संबंधों को निभाने को लेकर भी बहुत संवेदनशील रहते थे।

जब मुझे गुजरात का मुख्यमंत्री बने कुछ ही महीने हुए थे तब साहनी जी को गोवा के राज्यपाल के तौर पर नियुक्त किया गया था। उस दौरान भी मुझे उनके सियासी अनुभव का लाभ मिला। उनकी सामाजिक समन्वय और समभाव की दृष्टि भी बहुत अधिक प्रशंसनीय थी। गोवा में राज्यपाल रहते उन्होंने राजभवन में कई वर्षों से बंद पड़े पुराने चर्च को खुलवा कर साप्ताहिक प्रार्थना शुरू करवाई थी। इसे लोग आज भी याद करते हैं।

आज स्वच्छ भारत मिशन केंद्र सरकार की प्राथमिकताओं में से एक है, लेकिन साहनी जी उन शुरुआती लोगों में से एक थे जिन्होंने दिल्ली को स्वच्छ और सुंदर बनाने का विचार दिया। 1978 में दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद के पद पर रहते हुए उन्होंने कहा था कि जब हम अपने घर को साफ रख सकते हैं तो देश और दिल्ली को क्यों नहीं रख सकते। वे उन्हीं के अथक प्रयासों का परिणाम था कि उस वक्त यमुना की स्थिति को सुधारने के साथ ही दिल्ली को भी हरा–भरा बनाने का कार्य आरंभ हुआ। स्वर्गीय श्री साहनी जी स्वच्छ भारत मिशन में मेरे लिए आज भी एक प्रेरणास्रोत हैं।

साहनी जी का वाह्य व्यक्तित्व कठोर था, लेकिन मन बहुत कोमल और संवेदनशील था। इंसानियत और ईमानदारी की जो मिसालें स्वर्गीय साहनी जी समाज को देकर गए हैं, वैसी अब कम ही मिलती है।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी की अंत्योदय की भावना को पूरी तरह आत्मसात करते हुए साहनी जी संपूर्ण व्यवस्था को अंत्योदय दर्शन के प्रति सजग करते रहे। मेरे साथ साझा किए हुए उनके अनुभव आज भी अमूल्य हैं।

अस्थमा और दूसरी बीमारियों से परेशान रहने के बावजूद वे अपनी मजबूत इच्छाशक्ति के बल पर लंबे समय तक काम करते रहे थे। केदारनाथ साहनी जी का इस संसार से विदा लेना मेरे लिए निजी क्षति थी। उनके संपर्क में आने वाला हर व्यक्ति महसूस करता था कि वे अपने सिद्धांतों के प्रति कितने प्रतिबद्ध थे। वे स्वयं एक संस्था की तरह थे। वे चाहे दिल्ली बीजेपी में रहे हों या फिर केंद्रीय संगठन में, कार्यकर्ता उनके पास निरंतर मार्गदर्शन के लिए जाते रहते थे। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व देश की भावी युवा पीढ़ी को सदैव ही एक प्रेरणास्रोत बनकर मार्गदर्शन देता रहेगा।

स्व. महेंद्र सिंह जी का साकेतवास

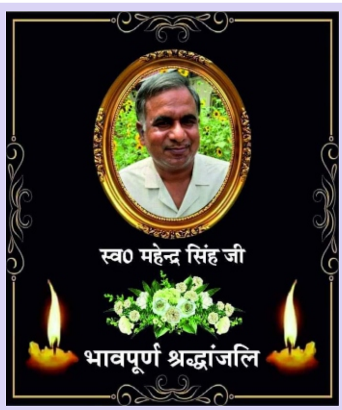

भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश कार्यालय के मुख्य लिपिक, 1997 से भाजपा की अहर्निश सेवा में समर्पित महेंद्र जी को विगत दिनों असाध्य रोग कैंसर ने 14 अक्टूबर 2022 को अपने आगोश में ले लिया था। उनके निधन पर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह जी प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह जी मुख्यालय प्रभारी भारत दीक्षित ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा है कि महेंद्र सिंह का निधन पार्टी के लिए अपूरणीय क्षति है।

उनके पैतृक गाँव बिहार, उन्नाव में कार्यालय परिवार के सदस्यों ने वहाँ पहुच कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

प्रभु से प्रार्थना उनको सद्गति दे!

RAVI

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
अक्टूबर द्वितीय अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

दीपोत्सव अयोध्या धाम - 2022

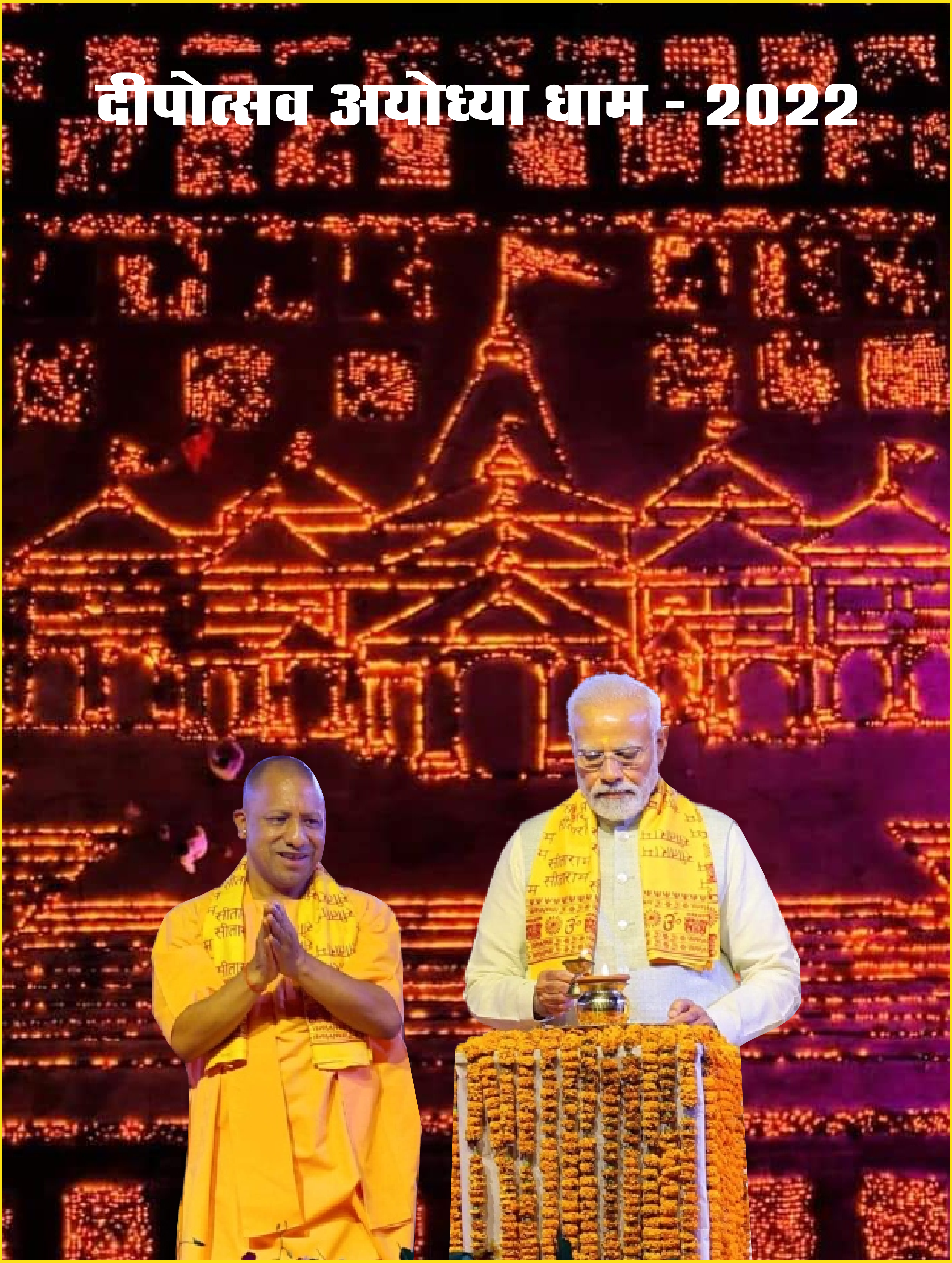

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी